संवेदना

कथा एवं काव्य संग्रह

संपादकगण

वकील कुमारयादव

राहुल मिश्रा

डॉ. दिनेश श्रीवास

NOTION PRESS

NOTION PRESS

India. Singapore. Malaysia.

ISBN-13: 978-1685090555

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

कोरोना वारीयर्स को समर्पित.

Contents

Contents

भूमिका.....xi

1.टीनू की मां.....15

डॉ. दिनेश श्रीवास.....15

2. विकलता.....20

डॉ. दिनेश श्रीवास.....20

3. विषधर के बच्चें.....23

डॉ. दिनेश श्रीवास.....23

4. ऑटोवाला.....27

डॉ. दिनेश श्रीवास.....27

5. इंस्पेक्टरनी.....39

डॉ. दिनेश श्रीवास.....39

6. उल्टा आदमी.....54

डॉ. दिनेश श्रीवास.....54

7. बारात.....65

डॉ. दिनेश श्रीवास 65

8. डायन मां.. 73

डॉ.दिनेश श्रीवास 73

9.सोने का त्याग 84

हरी राम 84

10.संवेदना.. 86

रिजवाना परवीन 86

11."दर्द और डर के संसार में सवेरा".................................. 88

ममता कुमारी... 88

12. रंगों को रंगों पर लगाकर घूमता हूँ मैं............................ 90

चेतन बगड़िया.. 90

13. चुनाव आ गए है.. 92

चेतन बगड़िया.. 92

14. क्या आज मैं आजाद हूँ? 94

चेतन बगड़िया.. 94

15. राजनीति 96

चेतन बगड़िया 96

16. मेरी पहचान 98

चेतन बगड़िया... 98

17. एक कवि की तलाश में.. 99

मृदुल सी मृणाल... 99

18.कैंसर ट्रेन 102

मृदुल सी मृणाल 102

19. जय घोष करो 105

डॉ. दिनेश श्रीवास... 105

20. गावों की सड़कें... 107

डॉ. दिनेश श्रीवास... 107

21. अखण्ड भारत... 111

वकील कुमार यादव 111

22. माँ : पूर्ण के लिए अपूर्ण रचना 114

अजय कुमार 114

23. हदें : सीमा से परे... 116

अजय कुमार 116

24. जो मैं हूं 118

जुली झा.. 118

25. उफ़.. 120

जुली झा... 120

26. नहीं रहना मुझे उस समाज में 123

ममता 123

27. भारी-भारी माहवारी 126

कुमारी आरती 126

28. नसीहत 130

कुमारी आरती 130

29. लव और कुश... 132

कुमारी आरती 132

संपादक परिचय 135

भूमिका

वर्तमान जीवन सरल नहीं है । दुनियादारी के भाग-दौड़ में मनुष्य अपनी संवेदना खो चुका है। संवेदना के अभाव में मानव आत्मकेंद्रित और अमानवीय व्यवहार करने लगा है । न केवल मानव जगत को, अपितु सकल चराचर जगत को सहानुभूति और सौहार्द्र की आवश्यकता है। इस कथा एवं काव्य संग्रह में इन्हीं भावनात्मक स्पर्शों से मानवीय मूल्यों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया है । इस संग्रह में कथा एवं काव्य दोनों संग्रहित हैं ,जो साहित्यिक रूपों की अपनी विशेषताओं से भ्रमित एवं व्यथित मानवता को संस्कारित करेंगी।

" टीनू की मां " कहानी में सहानुभूति और प्रेम के नाम पर हो रहे शोषण को उजागर किया गया है। टीनू की मां की ममता निस्वार्थ है । "विकलता " कहानी स्थितियों के हस्तांतरण की बात करता है । मनुष्य जिन स्थितियों में स्वयं के लिए सहानुभूति रखता है उन्हीं परिस्थितियों में वह दूसरों के लिए सहानुभूति नहीं रखता । राजेश का पुत्र वीरू जिस स्थिति से गुजर रहा है , राजेश भी उस स्थिति से गुजर चुका है । लेकिन इसके बावजूद भी दोनों में संबंधहीनता बढ़ती जाती है और परिवार में संवादहीनता की समस्या बनी रहती है । " विषधर के बच्चे " मानवीय अंतर्विरोध की कहानी कहता है । मनुष्य स्वयं दो-मुंहे सांप की तरह दोहरा व्यवहार करता है ।

"ऑटोवाला " कुसंगति में पड़े विद्रोही युवक की कहानी है जो अपने कृत्यों से परिवार के लिए त्रासदायक बना । " इंस्पेक्टरनी " कोमल भावनाओं से यथार्थ के टकराहट की कहानी है । जीवन के कटु यथार्थ से महेश का कोमल व्यक्तित्व पूर्णतः यथार्थवादी हो जाता है और शोभना भी इसी त्रासदी को झेलती है । इस कहानी में स्त्री-पुरुष के अहम् को भी विषय बनाया गया है । " उल्टा आदमी " एक सामाजिक व्यंग है जिसमें परिवार और समाज के लिए हानिकारक चरित्रों की खोज की गई है ।

" बारात " कहानी प्रेम विवाह के पश्चात विवाहेत्तर समस्याओं को सामने रखता है । "डायन मां " अंधविश्वासों के साथ असहाय लोगों की पीड़ा का व्याख्यान है । पार्वती के वाग्भ्रम और दुष्प्रचार से फूलमती को डायन समझ लिया जाता है । जबकि वह एक असहाय और ममतामयी स्त्री है । " सोने का त्याग " और " संवेदना " दोनों कहानियां मानवेत्तर प्राणियों के प्रति करुणा की वकालत करतीं हैं ।

" कविता का दर्द और डर के संसार में सवेरा " में भय के विरुद्ध विश्वास को सबल बताया गया है । मुखौटावादी समाज और रंग बदलते चरित्रों को " रंगों को रंगो पर लगाकर घूमता हूं मैं " में स्पष्ट किया गया है । अवसरवादी राजनीति की पोल खुलती है चेतन बगड़िया की " चुनाव आ गए " में । " क्या मैं आजाद हूं " नामक कविता में कवि सांसारिक छल-प्रपंच से मुक्त व्यक्तित्व की खोज में सफल हो जाते हैं । " राजनीति " नामक कविता में पुनः अवसरवादी राजनीति के हथकंडों का दिग्दर्शन कराया गया है। " मेरी पहचान " कविता मे कवि अपनी निश्छल व्यक्तित्व की पहचान बताता है । "

एक कवि की तलाश " कविता उस कवि की तलाश में निकली है जो भावनाओं ,सहानुभूतियों और संवेदनाओं से संपृक्त हो । "जय घोष करो " मानवतावादी कविता है , जिसमें राष्ट्रवाद और मानवतावाद को मिश्रित कर दिया गया है । "गांव की सड़कें " कविता प्रकृतिचित्रण ,ग्रामीण जीवनचर्या और ग्रामीण जीवन की झांकी प्रस्तुत करती है । सड़कें गांव के विकास के सेतु हैं। सड़कें , ग्राम और शहर की संस्कृति के आदान-प्रदान के माध्यम हैं ।

जीवन-जगत के विविध पक्षों से इस संग्रह को परिपूर्ण करने वाले सभी लेखकों और कवियों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं । इस संग्रह के स्वप्नदर्शी संपादक द्वय श्री वकील कुमार यादव और श्री राहुल मिश्रा के साथ इस संग्रह को मूर्त रूप प्रदान करने वाले नोशन प्रेस को भी मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं ।

- डॉ. दिनेश श्रीवास

. संपादक मंडल

1.टीनू की मां

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

टीनू की मां अक्सर लोकल ट्रेन से शहर जाती थी अपने छोटे से किराना दुकान के लिए सामान खरीदने के लिए। ट्रेनों की लेटलतीफी के कारण उसे घर लौटने में रात हो जाती थी । घर में टीनू उसका इंतजार करता रहता था । टीनू दिन भर अकेले रहकर दुखी होता रहता था । मां के आने पर नाराजगी जाहिर करता था । टीनू 19 साल का विकलांग लड़का था जिसके पैर नहीं चलते थे । बचपन में 5 साल की उम्र में जब उसके पिता का दुर्घटना में निधन हुआ ,उसी साल से उसके पैर निर्जीव हो गए थे । टीनू की मां ही उसे शौच- स्नान कराती थी। विधवा , टीनू की मां छोटे से किराना दुकान से घर का खर्च चलाती है । टीनू पढ़ने में बहुत अच्छा नहीं था । उसे स्कूल जाने में विकलांगता के कारण बहुत तकलीफ होती थी । उसे अपनी लाचारी पर गुस्सा आता था । कहीं कोई बच्चा उसे विकलांग कहकर चिढ़ा देता था तो उस दिन तो जैसे कयामत हो जाती थी । टीनू घर पर जाकर अपनी मां से झगड़ता था और स्कूल न जाने की धमकी देता था । मां कहती रही - " बेटा कुछ पढ़ ले हो सकता है तेरा भला हो जाए । मेरे बाद तेरा क्या होगा ? पढ़ाई ही तेरा सहारा बनेगा । "

लेकिन टीनू ने अपनी मां की एक न सुनी दूसरे साल से स्कूल जाना बंद कर दिया । टीनू ने अपने रिक्शे वाले से झगड़ा कर उसे आने के लिए मना कर दिया था।

एक दिन फिर मां को ट्रेन से आने में देर हो   गई । उसे मालूम है कि टीनू नाराज होगा ,पता नहीं उसके टेबल में रखा खाना उसने खाया होगा या नहीं ? शाम को पड़ोसवाली सरला आंटी आकर टीनू के पास 2 घंटे बैठी थी। सरला ने आजकल टीनू से मेल-जोल बढ़ा लिया है। वह किसी तरह अपनी भतीजी की शादी टीनू से करा देना चाहती है । भतीजी की शादी की जिम्मेदारी अभी उसके सर है।   टीनू को ज्यादा दहेज भी नहीं देना पड़ेगा । लेकिन टीनू की मां शादी के लिए अभी तैयार नहीं ।

टीनू की मां यह सोचते-सोचते घर   पहुंच गई । घर के अंदर दाखिल होकर उसने सब सामान को किनारे लगाया और थके मन से अंदर के कमरे में गई । सामने टीनू उसे घुरता हुआ बैठा था। मां समझ गई ,टीनू नाराज है । बर्तन में रखा खाना वही का वही है। मतलब टीनू ने खाना भी नहीं खाया है। " बेटा खाना क्यों नहीं खाया "   कोई उत्तर नहीं मिला । मां टीनू के पास कुर्सी पर बैठ गई। मां ने कहा- "बच्चे खाना क्यों नहीं खाया?"   " आज ट्रेन लेट थी, तू जानता है मुझे देर हो जाती है "

" तो जाती क्यों है ? " टीनू ने तेज आवाज में उत्तर दिया ।

" बेटा दुकान के लिए सामान लाना जरुरी होता है, हमारा गुजारा कैसे चलेगा "

" क्या गुजारा चल रहा है? इससे तो अच्छा --- --"

" बेटा जैसा भी है हमारा गुजारा तो ऐसे ही चलेगा "

" लेकिन तुम मुझे छोड़कर न जाया करो मैं अकेले हो जाता हूं । मैं दिन भर मगजमारी करता रहता हूं केवल सरला आंटी है जो मेरे बारे में सोचती है और तुम तो बस -----"

" बेटा सरला आंटी की बातों में न आना वो ----"

"वो क्या ! ---   मां वो ठीक तो कहती है सरला आंटी की भतीजी इस घर की बहू बन जाएगी तो देखरेख करेगी , काम में तेरा हाथ बटाएगी और जब तू किराना सामान लेने शहर जाएगी तो मेरे साथ रहेगी । मैं अकेला नहीं रहूंगा । "

" --- पर बेटा शादी के बाद और भी कुछ होता है वो सब --- फिर वो लडकी तुझे पसंद करती है ? तेरे साथ रह लेगी ? "

" - - हां हां मैं जानता हूं, तू क्या कहना चाहती है । -- लेकिन वो लड़की जानती है कि मैं विकलांग हूं। सरला आंटी ने उसे बताया है।"

" लेकिन बेटा अभी सरला अपना बोझ उतारने के लिए तुझसे उस लड़की की शादी कर रही है----। मुझे सरला आंटी की नियत ठीक नहीं लगती-----"

" रहने दे मां   तू हमेशा अपनी चलाती है । तुझे मेरी परवाह थोड़ी है। मैं तो तेरे लिए सिर्फ एक विकलांग हूं न । "

" अच्छा ठीक है बेटा मैं इस बारे में सोचूंगी। चल अभी खाना खा लेते हैं मैंने भी कुछ नहीं खाया है । '

"-- तो तू खा ले, मुझे नहीं खाना "

ऐसा कहकर टीनू अपने बिस्तर पर लेट गया । मां ने भी खाना नहीं खाया ।   बिस्तर पर लेट गई । अपने स्वर्गवासी पति की तस्वीर को देखते-देखते उसके आंखों में आंसू आ गए । फिर सोचते-सोचते आंख लग गई । दूसरे दिन ही मां सरला आंटी के घर गई और सरला से कहा-

" सरला मुझे तुम्हारे भतीजी से बात करना है क्या वो टीनू के साथ अपनी जिंदगी चला लेगी ? पूरा घर और टीनू उसे ही संभालना होगा । मंदिर में शादी करा देते हैं। मैंने अपनी बहू से लिए कुछ गहने बनवाएं हैं वह सब उसे दे दूंगी । "

सरला की भतीजी ने शादी के लिए हामी भर दी । एक हफ्ते बाद सरला की भतीजी बहू बनकर टीनू के घर आ गई । घर के कामों हाथ बटाने लगी ।

कुछ दिनों बाद अपने दुकान के समान के लिए टीनू की मां शहर गई । शाम को लौटकर घर आकर उसने हमेशा की तरह टीनू से पूछा-

" बेटा खाना खा लिया ?बहू कहां है ?"

इतना सुनते ही टीनू रोने लगा --

" वह चली गई । उसने जाने से पहले मुझसे कहा कि तुम्हारे साथ जिंदगी जीना मुश्किल है। तुम खुद पर बोझ हो । तुम्हारे बोझ को तुम्हारी मां ही सह सकती है मैं नहीं । वह तुम्हारे जेवर, पैसे और सामान भी लेकर लेकर चली गई। मां तुमने मुझे समझाया था ,पर मैं नहीं माना। मेरी गलती है लेकिन तू मुझे छोड़कर कभी नहीं जाना मां ,नहीं जाना । "

अपने जवान बेटे क़ो रोता देखकर टीनू की मां भी रोने लगी-

" नहीं बेटा मैं तुझे कभी छोड़कर नहीं जाऊंगी। तू ही मेरा सब कुछ है । उसे ले जाने दे ,सोना चांदी फिर कमा लेंगे । बेटा तेरा मेरा दुख का रिश्ता है । मैंने दुख को तुम्हारे साथ जीया है। संवेदना को महसूस किया है । मैं तुझे समझती हूं और तेरी पत्नी की संवेदना कभी जागृत नहीं हो पाई । कुछ लोग सहानुभूति दिखाकर लुटते हैं सरला और उसकी भतीजी ऐसे लोगों में से हैं। "

मां ने टीनू को गले से लगा लिया।

2. विकलता

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

नन्हा राजेश बार - बार खिड़की से गली की ओर झांकता है । उसे कोई नहीं दिखा। राजेश से रहा नहीं गया । वह बाहर आ गया। गली में सिर्फ एक छोटा बच्चा खड़ा था । राजेश का कोई दोस्त गली में नहीं था। राजेश सोचने लगा सुबह के 8 बज गए हैं , आज होली का दिन है और कोई होली खेलने गली में नहीं निकला। राजेश निराश होकर घर के अंदर आ गया । मां ने आवाज लगाई - " राजू अभी रुको ! नहीं जाना । राजेश ने मां को चूप रहने का इशारा किया ताकि पापा को ये बात पता न चले । लेकिन पापा ने यह बात सुन ली। राजेश की धड़कन तेज हो गई। उसे पता था अब पापा की डाट सुननी पडेगी। पिता की डाट शुरू हो गई --

" अभी से क्यों परेशान होता है यह लड़का ! पता नहीं क्यों पैर नहीं टिकते इसके ? अभी कोई निकला नहीं गली में और यह उछल -कूद कर रहा है। "

राजेश गंभीर हो गया। शायद उसी की गलती है। पापा की डाट सुनते हुए राजेश सोच रहा था कि पापा को जब भी मौका मिलता डाट देते हैं। पता नहीं बाप- बेटे के रिश्ते में ऐसा क्या है ? क्या कभी बाप बेटा नहीं रहा होगा? उसका भी मन कभी ललचाया नहीं होगा? दुनिया ऐसी क्यों है?ये

पिताजी ऐसे ही क्यों होते हैं? बडे होते तक राजेश के मन में ये प्रश्न उठते रहे।

अब राजेश की शादी के बाद एक बेटा है , वीरू जो राजेश के जैसा ही चंचल है। 5- 6 साल तक उसकी
चंचलता और तोतलेपन को सभी लोग अच्छा मानते थे । वीरू जब थोड़ा बड़ा हुआ तो वही विकलता उसके मन में थी ।

आज वीरू के स्कूल में एनवल फंक्शन है । आठ बज चुके हैं वीरु परेशान होकर कहने लगा -

" मेरे सभी दोस्त स्कूल पहुंच गए होंगे । अभी तक आटोवाला नहीं आया । वीरू ने मां को परेशान करना शुरु कर दिया -- " मम्मी मैं अपनी साइकिल से स्कूल चला जाता हूं , लगता है आटोवाला नहीं आएगा।

मम्मी ने कहा-
" थोड़ी देर रुक जा बेटा अभी तो 8:00 बजे हैं । एनुअल फंक्शन तो 10:00 बजे से शुरु होगा । "

" मम्मी मुझे जल्दी पहुंचना है । दोस्तों से बातें करनी है। एनवल फंकशन की तैयारी करनी है । मुझे जल्दी पहुंचना है । तुम समझती नहीं हो। "
वीरू ने उत्तर दिया

वीरू सायकल से स्कूल चला गया । द्ो घंटे बाद स्कूल से फोन आया कि वीरू का एक्सीडेंट हो गया है । उसके पैर में

चोट आई है। राजेश की पत्नि सोचती रही जिसका डर था वही हुआ । वीरू , भीड़ में साइकल चलाना नहीं जानता। अब इसके पापा को क्या जवाब दूंगी । शाम को घर आने पर राजेश ने देखा कि वीरु पलंग पर लेटा हुआ है उसके पैरों में प्लास्टर चढ़ा है । राजेश को उसकी पत्नी ने पहले ही फोन पर सब कुछ बता दिया था । राजेश का मन हुआ कि वह अपने बेटे को जी भर कर डांटे । पर जैसे-तैसे उसने अपने आप को सम्भाला । फिर भी राजेश अपने मन में सोचता रहा -

" इस लड़के को इतनी जल्दी क्यों रहती है । कल साइकिल से स्कूल क्यों गया । हर चीज में विकलता दिखाता है और मां-बाप को परेशान करता है। समझाने पर बाप को दुश्मन समझता है । पापा ऐसे ही क्यों होते हैं । शायद मैं भी बचपन में ऐसा ही सोचता था । विकलता, उत्साह, जल्दी पाने की चाह को पहले मैं जी रहा था आज मेरा बेटा जी रहा है । अपने जीये हुए अनुभव को हम सब भूल जाते हैं । समय और परिस्थिति के अनुसार हमारे अनुभव हमारे काम आते हैं। पिता - पुत्र दो किनारों की तरह कभी अनुभव को पुनर्जीवित नहीं कर पाते हैं। यदि हम अपने इन अनुभवों को पुनर्जीवित करलें तो हम दूसरे की स्थिति को समझ सकते हैं । लेकिन हम अन्जाने या जानबूझकर ऐसा नहीं करते, इसीलिये पारिवारिक संबंधों में खटास और मनमुटाव बढती जाती है फिर संबंध हमेशा के लिए खराब हो जाते हैं। "

ऐसा सोचकर राजेश ने वीरू को कुछ नहीं कहा।

३. विषधर के बच्चें

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

शाम को जब विनोद काम से लौटा, कुछ लोग उसके घर के सामने डंडे लिए खड़े थे। वो थोड़ी देर में समझ गया कि उसके घर में किसी अयाचित अतिथि का आगमन हुआ है। घर के और पास जाने पर यह निश्चित हो गया। घर के लोग इधर-उधर ताकते खड़े थे । बच्चे ने बताया कि हमारे घर में दो अयाचित अतिथि आए हैं । उसने कहा हमारे घर में दो सांप घुस गए हैं। हम लोग कई घंटे से उसे निकालने का प्रयास कर रहे हैं। विनोद भी सचेत हो गया ,कहीं से डंडे का इंतजाम करने लगा है। घर के लोग भयभीत थे । बच्चों के मन में भय से अधिक जिज्ञासा थी उन अयाचित अतिथियों को देखने के लिए । डंडे धारण किए हुए कुछ सहयोगी पडोसी लगातार सलाह पर सलाह दिए जा रहे थे। कुछ लोगों ने कहा वे दोनों सांप जैसे ही मिले मार डालो। दूसरे ने कहा उन्हें मार कर जला डालो । एक ने कहा उन्हें मारना ठीक नहीं भगा देना चाहिए। बाहर से एक ने आवाज लगाई कौन सा सांप है? पता नहीं, । पड़ोसी ने कहा , कही करैत तो नहीं। करैत और कोबरा बहुत विषैले होते हैं । किसी ने कहा कि स्नेक कैचर को बुला लो। विनोद भी सचेत हो गया और अपने मोबाइल को तलाशने लगा । तभी एक बच्चे ने आवाज लगाई सांप वहां है, और सब लोग सचेत होकर उधर देखने लगे । सब अपने डंडे को हाथ में लिए तैयार हो गए । कोने में पेड़ के

पास पड़ोसी ने सांप को ढूंढ लिया था । यह कुछ बड़ा सांप था मटमैला रंग का।

पड़ोसी ने डंडे से दो चार बार वार किया,लेकिन सांप की किस्मत अच्छी थी उसे एक भी नहीं लगी। सांप वहां से निकलकर तेजी से दरवाजे की ओर भागने लगा। भीड़ तितर-बितर हो गई और सांप को रास्ता मिल गया। वह बाहर निकल गया। सभी ने राहत की सांस ली ,लेकिन अभी भी घर के अंदर दूसरा सांप था ,इसलिए चिंता थी । वह छोटा था । उसे ढूंढने में दिक्कत हुई। काफी देर मेहनत करने पर भी उसका पता न चला । सभी लोग घर के अंदर आ गए । तभी घर के बाहर की तरफ एक महिला चिल्लाई- बाप रे ! इतना बड़ा सांप । सभी महिला की तरफ गए । महिला ने बताया कि वह कोने में गया है। कोने के पास डण्डा पटकने पर वह बडा सांप बाहर निकल गया । लोगों ने पहचान लिया ,यह वही बड़ा सांप था । सभी को बहुत आश्चर्य हुआ वही बडा सांप लौट आया । उसे अपनी जान की परवाह नहीं । इस सांप को मार डालो - किसी ने आवाज लगाईं । दो महिलाएं आपस में धीरे -धीरे बात कर रही थी ,आज सोमवार है और सावन भी है सांप नहीं मारना चाहिए । लेकिन हमें क्या? अच्छा है मारने दो नहीं तो हमारे घर में घुस जाएगा । एक महिला ने कहा यह हमारे घर में न जाने पाए । एक पड़ोसी ने डण्डा चला दिया जो बडे सांप के पास गिरा,शायद उसे लगा भी ।

वह तिलमिला कर भागा। उसके लिजलिजे शरीर को देख कर मन खिन्नता से भर जाता था। पर किसी तरह उसे बाहर तो निकालना था क्योंकि

घर में छोटे -छोटे बच्चे थे । उसके घर में रहने से हम चैन की नींद नहीं सो सकते थे ।

कुछ देर बाद एक कोने से छोटा सांप घर के बाहर जाने लगा । घर के बाहर कुछ दूर जाकर रुक गया । पता नहीं क्यों ? कुछ लोग उसके पीछे गए उसे मारने के लिए लेकिन वह वहीं बैठा रहा । लोग जैसे ही उसके पास पहुंचने वाले थे इधर से दूसरा बड़ा सांप निकल गया । बाहर की ओर भागने लगा लोगों का ध्यान इस बड़े सांप पर आ गया । वह बाहर भागने में सफल हो गया । छोटे सांप ने बड़े सांप का अनुसरण किया । कुछ दूर चल कर दोनों समानांतर रूप से चलने लगे । एक पड़ोसी उनको मारने की मंशा से पीछे गया । अचानक विनोद को कुछ सुझा और उसने पड़ोसी को आवाज लगाई- नहीं, जाने दो । सभी ने विनोद की तरफ आश्चर्य से देखा । लेकिन थोड़े ही देर बाद उनके चेहरों में विनोद के लिए स्वीकृति का भाव था । वह दोनों सांप साथ चल रहे थे । बड़ा सांप छोटे सांप को इस प्रकार निर्देशित करते हुए चल रहा था जैसे कोई मां अपने बच्चे को उंगली पकड़ कर चल रही हो ।

बच्चों ने विनोद से पूछा आपने उनको क्यों नहीं मारा दोबारा घर में घुस जाएंगे तो ? विनोद ने कहा -अब वे नहीं आएंगे । बच्चों ने पूछा -आपको कैसे पता है? विनोद ने कहा- क्योंकि उनको जो चाहिए वह मिल गया ,वह दोबारा अपने बच्चे के लिए ही आया था । बच्चे ने पूछा- सांप भी अपने बच्चों से प्रेम करते हैं ? "हां इंसानों से ज्यादा । " "लेकिन पापा ये हमारे घरों में क्यों जाते हैं घुस जाते हैं " विनोद ने उत्तर दिया - "क्योंकि इनके अधिकतर घर तो हम

मनुष्यों ने बर्बाद कर दिए । जंगल ,झाड़ियां ,बाग -बगीचों को काट दिए । बरसात के दिनों में पानी बरसने पर इनके बिलों में पानी घुस जाता है तभी ये बाहर इधर-उधर भागते हैं । नहीं तो अपने घरों को छोड़कर भला कौन बाहर जाता है।"

" हम सांप से इतना डरते क्यों हैं " - बच्चे ने पूछा ।

विनोद ने कहा - "उसके जहर के कारण वह किसी को काट ले तो वह मर सकता है ।"

" पर नाग पंचमी को हम उनकी पूजा क्यों करते हैं ,क्या हम उनके लिए घर नहीं बना सकते । "

विनोद के पास इसका उत्तर नहीं था । विनोद बच्चे की और देखता रहा फिर सोचने लगा -

" मनुष्य उनके लिए घर नहीं बनाता बल्कि तोड़ता है । घर तोड़ने का जहर केवल हम इंसानों के पास है और किसी में कहां? "

4. ऑटोवाला

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

ट्रेफिक पुलिसवाले ने हाथ दिखाकर ऑटोवाले को रोकने का इशारा किया। ऑटो कुछ दुर जाकर खड़ी हो गई । उसमें से ऑटोवाला निकलकर पुलिसवाले के पास गया। पुलिस वाले ने कड़े आवाज में फटकार लगाई - " क्यों बे हाथ नहीं दिखता ? , तू लाटसाहब है ? "

" नहीं भैयाजी ऑटो में ब्रेक थोड़ा कम है । "
ऑटो वाले ने उत्तर दिया

पुलिसवाला- " अबे ! ऑटो ला , चल थाने तेरा ब्रेक लगाता हूं । साले ! कंडम गाड़ी चलाते हो और सवारी देखो तो ---- , साले ! बहुत कमा रहे हो , चल आज तुझे बताता हूं , गाड़ी खड़ी कर , उतार सवारी । "

ऑटोवाला- " नहीं भैयाजी माफी दे दो, गलती हो गई , जाने दो । "

पुलिसवाला- " अबे ! चालान काटुंगा , सवारी उतार --- "
ऑटोवाला- " नहीं भैयाजी किराये की ऑटो है, आज तो किराये का पैसा भी नही निकला, जाने दो ,कुछ चाय-पानी ले लो । "

पुलिसवाले ने कुटिल मुस्कान से कहा - " ला चल दे 200 रुपए । "

ऑटोवाला- " नहीं भैयाजी अभी तो मेरे पास केवल 50 रुपए हैं ,बाकी दूसरे राउंड में दे दूंगा बायगाड ! भैय्या जी ! "

पुलिसवाला- " चल बे ! सब्जीवाला समझता है,
पैसा दे नहीं तो गाड़ी खड़ी कर --- "

दोनों की बात-चीत चलती रही , ऑटो से एक सवारी उतरा और वहां पहुंचकर समझाइश देने लगा - " क्या हुआ सर जी, कुछ प्रॉब्लम है, क्यों भाई ऑटोवाले ?"

पुलिसवाला- " अच्छा बाबू साहब आप कैसे? आप लोगों को दूसरी ऑटो नहीं मिलती जो इस हरामखोर के साथ चलते हो ? -- "

ऑटोवाला- " देखो साहब ! गाली क्यों दे रहे हो ? मैंने कोई गलती थोड़ी की है, गाड़ी का परमिट भी है ---?

पुलिसवाला- " अबे लात मारूंगा साले ! बाबू साहब को देखकर उचक रहा है----, अंदर कर दूंगा । "

पुलिसवाले ने गुस्से से ऑटोवाले की तरफ हाथ उठाया।

ऑटोवाला- " रहने दो साहब ! पुलिसिया रोब, बहुत देखे हैं --- "

पुलिसवाला- " कौन है बे तू -- जवान लड़ाता है , मार खाएगा--- "

ऑटोवाला- " ठाकुर खेमराज का लड़का हूं साहब ,यू ही नहीं -- "

पुलिसवाला- " अरे ! तू ही है वो नालायक, निकल ,चल, खिसक यहां से चल -- "

पुलिसवाला मुडकर वापस अपने ट्रैफिक चौराहे में चढ़ गया । बाबू साहब को थोड़ी जिज्ञासा हुई कि पुलिसवाले ने ठाकुर खेमराज के नाम पर इसे कैसे छोड़ दिया । ऑटोवाले ने ऑटो स्टार्ट किया ।आटो चल पड़ी । पीछे बैठे आदमी ने पूछा - " क्या हुआ ? "

ऑटो वाला- " वही रोज की चिक-चिक साला ! हाथ उठा रहा था --- आटो कर्जे पर है , वरना बताता उसको

बाबू साहब- " कितना कर्जा है ? "

ऑटोवाला- " साठ हजार देकर लाया हूं इस कबाड़ को , साला ! सब पैसा इसी में लग रहा है। मेरी किस्मत की खराब है । शिबू ने दूसरा ऑटो उठा लिया है ,किराये पर चला रहा है ,दो तरफा कमा रहा है । ये साला ! खर्चा पे खर्चा मांग रहा है । अभी इंजन का काम कराया हूं। साला ! आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया ------

चलो भाई मनिहारी चौक वाले उतरो पैसा निकाल लो भाई "

दो सवारी उत्तर गए और ऑटो वाले हो पैसा देने लगे
ऑटोवाला- " अरे बीस रुपए दो भाई दस नहीं, बीस लगता है ---

सवारी- " नहीं दस लगता है भैया ---- "

ऑटोवाला- " अरे ! फिर वही, दो जल्दी, आगे भी जाना है-- "

सवारियों ने बीस-बीस रुपये दिये

ऑटोवाला- " बिना चिक्-चिक के एक रूपया नहीं मिलता "

बाबू साहब ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा- " हर काम में चिक-चिक है भाई ऑटोवाले--- "

ऑटोवाला- " अरे नहीं बाबू आप लोग मजे में हैं-- अपनी तो जिंदगी बस ----- "

बाबू- " तो तुम भी क्यों नहीं बन गए हमारे जैसे ? "

बाबू साहब की बात सुनकर ऑटोवाला कुछ देर चुप रहा । बाबू साहब को लगा कि उसने कुछ गलत कह दिया । ऑटो में कुछ देर तक सन्नाटा रहा।

बाबू ने फिर शुरुआत करते हुए कहा-

" कितना कमा लेते हो ? "

कुछ देर बाद उत्तर आया-

"पांच-सात सौ रुपए "

बाबू- " अरे वाह ! तब तो खर्चा निकल जाता होगा ? "

ऑटोवाला- " नहीं बाबू दवा- दारु में ही चला जाता है --- "

बाबू- "दवा कि दारु में ? "

ऑटोवाला- " न न , मतलब दवा में , मां बीमार रहती है घर में --- , घर भी तो किराए का है क्या बताऊं---- "
बाबू- " तुम्हारी शादी हो गई ? "
हॉट वाले का आत्मा लाभ सुनकर चाय वाला गिलास लेने आया
ऑटोवाला- " कहां साहब ! अभी बहन भी बची है "

बाबू- " कौन-कौन है घर में ?

ऑटोवाला- " मां ,बहन और मैं ,बस --- "

बाबू- " अरे रुको भाई! मेरा घर आ गया है कितना देना है तुम्हें बताओ ? लो काट लो पैसे -- , चलो धन्यवाद ! "

बाबू ऑटो से उतर गया । ऑटोवाले ने ऑटो आगे बढ़ा दी । चाय दुकान के पास ऑटो खडा किया और चायवाले को इशारा करके बैठ गया चाय आने पर चुस्कियां लेने लगा। बाबू की बात ने उसके मन में हलचल मचा दी थी ,वह बडबडाने लगा-

" बाप भी कमीना था ,बेटे की थोड़ी सी अवारगी बर्दाश्त नहीं कर सका , फांसी चढ़ गया और मुझे बदनाम कर गया , जी जाता तो क्या ? आज थाने का इंचार्ज होता । आवक होती ,धाक होता । मैं किसी कमीने की बात न सुनता । मेरा भी जलवा रहता । कार मेन्टेन करता -- -- , आज खाक झानता फिर रहा हूं , आज मजे में रहता--

ऑटोवाले को देख चायवाला आया। चायवाले ने गिलास उठाते हुए कहा- " क्या बात है पंजू किसे कोस रहे हो ?

ऑटोवाला- " किसको कोसुंगा---- जो मुझे बर्बाद कर गया और किसको। अपने बाप को "

चायवाला चुटकी लेते हुए- " ये पुण्य का काम तो हर औलाद करती है -- अपने बाप को कोसना --- "

ऑटोवाला- " बस बस मनीराम , रहने दे, लेक्चर मत मार , रहने दे , अपने चाय का पैसा ले और बात खतम कर-- '

चायवाला- " बेटा बात तो बुरी लगेगी जरूर--- "

ऑटोवाला- " सुन मन्नी ! मुझे यह बता क्या जवान लड़के से थोड़ी-बहुत नहीं हो जाती है ? उसे इतना बड़ा बनाना जरूरी नहीं होता कि--- "

चायवाला- " लेकिन तू तो मर्डर में पकड़ा गया न , क्या किसी बाप के लिए यह कम है , बचपन मे कान्वेंट स्कूल से भागा , सारे नशे किये, लड़कीबाजी की, -- सब माफ ,फिर तुझे अपने बाप की सर्विस रिवाल्वर बेचने में भी संकोच नहीं हुआ --- "

ऑटोवाला- "बस बहुत हो गया अब बंद करो बाप की धौस देता है -- "

ऑटोवाला उर्फ पंजू वहां से चलता बना । घर आकर फिर वही बात सोचने लगा । पंजू की बहन मीनाक्षी ने पंजू की आहट सुन ली। उसने पास आकर कहा- " भैया खाना खाओगे क्या? खाना बन गया है ।

ऑटोवाला- " क्या सब्जी है ?

मीनाक्षी- " चने की तरकारी है । "

ऑटोवाला- " फिर वही सब्जी -- "
मीनाक्षी- " भैया तूम्ही कोई अच्छी सब्जी क्यों नहीं ला देते ?

पंजू ने घूरकर देखा ।मीनाक्षी समझ गए कि बात बिगड सकती है इसलिए अंदर कमरे में मां के पास चली गई । थोड़ी देर बाद फिर से आवाज़ लगाई- " प्रहलाद भैया मां की दवाई लाए हैं कि नहीं ? "

ऑटोवाला- " कैसे भुलूंगा ? ---"

पंजू पास पडी खाट पर लेट गया और बडबडाने लगा- " अब इसके हाथ पीले करने होंगे लेकिन हमारे पास एक पैसा नहीं है--- ,बुढाऊ ने जो पैसे जमा किये थे उसे वकील ने मुझे मर्डर से बचाने के लिए खा लिये नहीं है पता नहीं कैसे होगा ।भगवान भी मेरे लिए खार खाये बैठा है-- उधार भी कोई नहीं देगा शिवाय उस चायवाले लेक्चरबाज के । वह भी 40 -50 हजार तक ही और लेक्चर मारेगा जिंदगी भर । पता नहीं और किसका -किसका सुनना पड़ेगा ? बाप की नहीं सुनी तो इन कमीनों की क्या औकात ?------"

दरवाजे पर किसी की आवाज आई- " माया भाभी ! घर पर हो "

आगंतुक मनीराम ने घर में प्रवेश करते समय प्रहलाद को देखा और अनदेखी करते हुए आखरी कमरे में चला गया जहां मीनाक्षी और उसकी मां बैठी है मनीराम ने दूर से ही प्रणाम किया और एक थैला मीनाक्षी की ओर बढ़ाते हुए कहा-

" ले बेटा ये भाजी गांव से लाया हूं और ठेले के बड़े भी हैं। साहेबजादे को भी पूछ लेना मुझसे तो नाराज ही रहता है जाने क्यों ?

मनीराम की आवाज सुनकर खाट पर लेटी मीनाक्षी की मां माया उठ गई और कहने लगी-

" क्या हुआ भैया प्रह्लाद ने कुछ कहा फिर --- अभी डांट लगाती हूं "

मनीराम- " न न -- नहीं भाभी, कुछ नहीं, हम दोनों की राशि ठीक नहीं है इसलिए हम दोनों ---

माया- " नहीं भैया राशि तो उस लड़के की ठीक नहीं है , बड़ों से गुस्से में बात करता है हमेशा --- पता नहीं कब उसका गुस्सा उतरेगा "

मनीराम- " रहने दो अभी छोड़ो, यह सब एक अच्छी खबर लाया हूं। एक अच्छे लड़के का पता चला है। नौकरी में है ,कोर्ट में बाबू है उपरी इनकम भी है। मीनाक्षी सुखी रहेगी "
माया- " भाई साहब वो लोग हमारे बारे में जानते होंगे तो ? इसके पिताजी के बारे में ? "

कहते -कहते माया की आंखों में आंसू आ गए

मनीराम- " नहीं वो लोग बाहर के हैं । फिर अपनी मीनाक्षी किसी परी से कम है ? इसे देखकर लड़का सब भूल जाएगा। क्यों मेरी परी मीनाक्षी ? "

मीनाक्षी शरमा कर रसोई में चली गई।

माया- " भैया लेकिन शादी में खर्चा भी खूब होगा । कहां से होगा ? उनकी पेंशन तो मेरी बीमारी में निकल जाती है । लड़का दिन-रात ऑटो चलाता है तब कहीं जाकर गुजारा चलता है । मेरे ही लाड -प्यार ने प्रहलाद को बिगाड़ दिया और इसके पिताजी -- -- । आज प्रह्लाद हाड़ तोड़ मेहनत करता है । बचपन में मेहनत कर ली होती ,बाप की सुन ली होती ,कुछ पढ़ाई- लिखाई कर ली होती तो आज पुलिस में होता । बुरे लड़को की संगति में सबका बिगाड़ दिया प्रहलाद ने । आपसे कुछ नहीं छिपा है भैया "

मनीराम- " छोड़ो भाभी अब आगे देखो ,सब हो जाएगा । हेमराज भैया कितने गुणी थे । किसान के लड़के होकर भी पढ़ाई में अव्वल रहते थे। कभी किसी से बेईमानी के पैसे नहीं लिए । उनके बाद लोग थानेदार बन गए ।पर उन्हें खुशामद पसंद नहीं थी । कहते थे की अपने बेटे को थानेदार बनाऊंगा -----

माया और मनीराम की बातों को प्रह्लाद सुन रहा था । वह खाट से उठ गया और रसोई में आकर मीनाक्षी से बोला-
" मीनू रोटी दे , नाइट करूंगा तेरे लिए । "

मीनाक्षी- " मेरे लिए , मतलब ---- "

ऑटोवाला- " कुछ नहीं रोटी ला ---- "

मां की आवाज आई - " कहां जा रहा है प्रह्लाद , अभी तो आया है।

ऑटोवाला- " अभी कहां आया हूं ? 30 साल तो हो गए आए ।
माया- " ओहो ! ये लड़का हमेशा उल्टी बात करता है । अरे अब रात को खा- पीकर सो जा सुबह जल्दी चले जाना ।"

ऑटोवाला- " नहीं , अभी तो मुझे अपनी राशि और किस्मत दोनों सवारने हैं। मैं रात दिन नहीं देखूंगा ।
माया- " लगता है लड़के ने हमारी बात सुन ली , , नाराज हो गया लगता है ।
ऑटोवाला- " केवल कागजों में लिखा- पढ़ी करने से किस्मत नहीं बनती। उसके लिए हुनर चाहिए किसी चीज का मीनू ।

मीनाक्षी ने चुटकी लेते कहा - " किस का ? ऑटो का ----- ? "

ऑटोवाला- " हां ऑटो का । तू यही कहना चाहती हैं न -- । तो सुन ले , मैं ऑटो में ही अपनी और तुम लोगों की किस्मत सवार कर बताऊंगा । "

ऑटोवाला उठकर बाहर ऑटो के पास गया और ऑटो स्टार्ट की और चल पड़ा । ऑटोवाला प्रह्लाद रास्ते में सोचने लगा -

" मैं ही अपने परिवार से अलग लगता हूं । सब के सब एक हो जाते हैं । मां ,मीनू और वह लेक्चरबाज चायवाला । सब मेरे ही पीछे पड़े रहते हैं । छोटी सी गलती क्या हुई जिंदगी में बस , उसी को पकड़े बैठे हैं और ताना मारते रहते हैं । मेरे दोस्त भी तो कमीनी निकले , साले ! मुझसे धोखे से पापा की सर्विस रिवाल्वर मंगा लिए और किसी की कनपटी पर उतार दिए । सब बिगड़ गया सालों ! के कारण , मुझे अपना जिगरी कहते थे मेरा जिगरा खा गए और मेरे बाप ने दुनिया से अलविदा कह दिया । मेरे मर्डर केस में फंसने से बाप ने खुदकुशी कर ली । अब त क्या होगा पता नहीं --- । ऑटो चलाकर भी मैं कुछ नहीं कर पा रहा हूं । जिंदगी कैसे चलेगी पता नहीं । ये सब सोचकर गुस्सा ही आता है । शायद मेरा बाप ठीक ही कहता था --- चलो अब क्या? "

चलता हूं , ट्रेन आई है कोई सवारी मिल जाय ? "
ऑटोवाला सवारी देखने स्टेशन के अंदर चला गया।

5. इंस्पेक्टरनी

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

शाम के 7 बजे हैं। महेश बाबू ऑफिस से आकर अपने कमरे में लेटे हुए हैं । थकान के कारण आँख लग गई ,लेकिन खाना बनाने की चिंता में महेश बाबू ज्यादा देर सो न सके । अभी उठकर उन्हें खाना पकाना है ,क्योंकि महेश बाबू अकेले रहते है । अपने पैतृक शहर से दूर नौकरी के चक्कर में उन्हें इस शहर में अकेले रहना पड़ता है । महेश स्वास्थ्य विभाग में क्लर्क हैं और क्लर्की भी संघर्ष से बामुश्किल मिली है । महेश अभी बिस्तर में ही अर्धनिद्रा में लेटे हैं । कमरे के बाहर कुछ शोरगुल-सा सुनाई दिया । पुलिस गाड़ी का सायरन बजने लगा । महेश को लगा कि जैसे पुलिस गाड़ी उनके कमरे के पास ही रुकी है। शायद कोई पूछताछ हो रही है, पुलिस की टीम आई है । पुलिस गाड़ी से बहुत तेजी से इंस्पेक्टरनी शोभना सिंह उतरी और उसने पास खड़े लोगों से पूछा-

" यहां महेश वर्मा कौन है ? "

एक आदमी ने महेश के कमरे की तरफ इशारा कर दिया । शोभना कमरे की ओर चल पड़ी। उसके आगे बढ़ते ही लोगों में चर्चा शुरू हो गई।

एक आदमी ने कहा- " लगता है महेश बाबू ने कोई गलत कार्य किया है जिसके लिए पुलिस उसे गिरफ्तार करने आई है ।

एक दूसरे आदमी ने कहा- " नहीं , महिला पुलिस आई है जरूर किसी लड़की को छेड़ा है, इन सब मामलों में महिला पुलिस बहुत पीटती है मार- मार कर पिछवाड़ा सुझा देती है । अब परदेसी बाबू की हीरोगिरी निकलेगी ,खुद को हीरो से कम नहीं समझता है ।

शोभना ने महेश का दरवाजा खटखटाया । महेश ने दरवाजा खोलते हुए देखा कि उसके सामने एक महिला पुलिस अधिकारी खड़ी है । महेश के बोलने के पहले ही पुलिसवाली ने पूछा-

" महेश वर्मा आप ही हैं ? "

महेश- " जी जी , मैं ही , पर आप --- ? "

शोभना- " मैं तुम्हें गिरफ्तार करने आई हूं "

महेश- " पर हुआ क्या ? "

शोभना- " हुआ क्या , राह चलती लड़कियों को छेड़ते हो और हीरो बनते हो । "

महेश- " लेकिन मैडम मैंने किसे छेड़ा है पता तो चले---

शोभना- " तो क्या मैं झूठ बोल रही हूं । ऐ

मिस्टर चेहरे में क्रीम -पाउडर लगाकर तुम लड़कियों को बेवकूफ बना सकते हो मुझे नहीं ।

महेश- " मैडम मैं कल से अपने चेहरे पर गोबर लगा लूंगा लेकिन आप यह तो बताइए कि मैंने किस लड़की को छेड़ा है ।

शोभना- " मुझे "

शोभना का जवाब सुनकर महेश आश्चर्य से शोभना की तरफ देखने लगा । उसे लगा कि यह चेहरा जाना पहचाना है । इससे पहले कि वह कुछ तय कर पाता । शोभना ने ठहाके लगाकर हंसना शुरू कर दिया । महेश ने आश्चर्य मिश्रित स्वर में कहा-

" ओह हो! शोभना , तुम हो । तुमने तो मुझे डरा ही दिया था ।

शोभना- " तुम इतने डरपोक कब से हो गए यार !

ऐसा कहते हुए शोभना महेश के गले लग गई । महेश सामने खड़े लोगों को देखकर कुछ शरमा गया। उसने झट से अपने आप को शोभना से अलग किया और हिचकिचाहट भरे स्वर में कहा- " शोभना अंदर बैठो ,चाय पीयो "

कमरे के सामने खड़े लोग हक्के -बक्के रह गए और आश्चर्य भरी नजरों से महेश और शोभना को देखने लगे । शोभना और महेश कमरे के अंदर आ गए । कमरे के बाहर खड़े लोग खुसफुसाते हुए दूर चले गए । शोभना ने महेश के कमरे के चारों तरफ देखते हुए कहा- " तुम ने शादी नहीं की अभी तक ? "

महेश ने संकोच में उत्तर दिया - " नहीं की "

शोभना- " क्यों "

महेश ने कोई उत्तर नहीं दिया

शोभना कुछ क्षण कमरे के चारों तरफ निहारती रही फिर पूछा- " खाना-पीना कैसे करते हो ?

महेश- " खुद से ही कर लेता हूं । ------लेकिन शोभना तुम यहां कैसे ? "

शोभना- " ओ यश ! -- भई मैं तूम्हारे शहर की नई स्पेक्टरनी हूं । मैं इसी थाने के चार्ज में हूं। लेकिन तुम अपनी सुनाओ , तुम यहां कब से हो और क्या कर रहे हो ?

ऐसा कहकर शोभना कमरे में रखे अस्त-व्यस्त बर्तनों और कपड़ों को देखने लगी ।

महेश- " मैं यहां स्वास्थ्य विभाग में क्लर्क हूं पिछले दो सालों से ।

शोभना- " यार ! पर बड़ा अजीब लग रहा है कि कालेज के जमाने का स्मार्ट और चार्मिंग महेश जिस पर लड़कियां जान देती थी ,वो आज इस एक कमरे में दुबककर बैठा है ।

कुछ देर शांत रहकर महेश ने कहा- " शोभना मैं तुम्हारे लिए चाय बनाता हूं । "

शोभना- " सिर्फ चाय "

महेश- " हां ----- अगर तुम चाहो तो खाना भी । "

शोभना- " हां वर्माजी ! आज तो हम खाना भी खाएंगे और सोएंगे भी । "

आश्चर्य से देखते हुए महेश ने कहा- " लेकिन शोभना, मेरे पास तो एक ही पलंग है ? "

शोभना- " तो क्या मैं पलंग पर सो जाऊंगी और तुम जमीन पर --- (हा हा ह-)

यह कहकर शोभना हंसने लगी । शोभना महेश की ओर देखने लगी । कुछ देर दोनों एक- दूसरे को देखते रहे फिर महेश ने नजर हटा कर कहा-

" ठीक है तुम पलंग पर सो जाना "

शोभना- " अरे ! नहीं वर्मा जी मैं तो मजाक कर रही थी । हम दोनों एक ही पलंग पर सोयेंगे 'आई डोंट माइंड ' ---

महेश ने चौंककर कहा-

" दोनों --- अच्छा मजाक है, नहीं लेकिन हम दोनों पलंग पर नहीं सो सकते

शोभना- " क्यों ? "

महेश- " क्योंकि पलंग बहुत छोटी है ।

शोभना- ' ओह ! मैं तो कुछ और ही समझ गई थी "

महेश- " क्या समझ गई थी ? "

शोभना- " कुछ नहीं "

तब तक चाय उबल चुकी थी । महेश ने चाय को दो प्याली में डाला और एक प्याली शोभना को दी । शोभना ने चाय पीनी शुरू कर दी । चाय पीने के साथ वह महेश के चेहरे की ओर देखती थी । कभी-कभी उनकी नजरें मिल जाती थी ,तब महेश तुरंत नजर बदल देता था । चाय पीते दोनों शांत थे। महेश मन में सोचने लगा-

" यह रोबदार स्पेक्टरनी वही लड़की है जो क्लास में पीछे बैठे रहती थी और किसी से बात नहीं करती थी । "

प्याली की चाय समाप्त हो चुकी थी । चाय की प्याली नीचे रखकर शोभना ने कहा- " अच्छा तो मिस्टर वर्मा हम चलते हैं --- "

महेश- " खाने के प्रोग्राम का क्या हुआ शोभना?

शोभना- " अरे छोड़ो यार ! खाना भी हम उस दिन करेंगे जिस दिन पीना-शीना होगा । जब कालेज की बातें याद करेंगे। कभी फुर्सत में थाने आना, वहां मेरा बंगला है । आज थाने में काम है , तो मैं चलती हूं । "

ऐसा कहते हुए शोभना कमरे से बाहर निकलने लगी । महेश उसके पीछे लग गया । शोभना ने पुलिस जीप में बैठकर कहा-

" मिस्टर वर्माजी , कल अपना बोरिया- बिस्तर लेकर थाने पहुंच जाना । मेरे थाने वाले बंगले में हम दोनों रहेंगे । तुम्हें खाने-पीने की मगझमारी नहीं करनी पड़ेगी ,मेरा चपरासी बहुत अच्छा खाना पकाता है । कल से वर्माजी का खाना, रहना वही होगा । "

महेश अवाक् रह गया ,कुछ बोल नहीं पाया।

शोभना चली गई। महेश कमरे में आकर पलंग पर लेट गया

तीसरे दिन दफ्तर से आते हुए महेश को किसी महिला ने आवाज लगाई । महेश ने जब मुड़कर देखा तो वो शोभना थी । पास आकर शोभना ने कहा-

" बड़े घमंडी आदमी हो वर्माजी । तुम थाने नहीं आए । "

महेश- " वो दरअसल मुझे दफ्तर के काम से बाहर जाना पड़ा, आज ही आया हूं ।

शोभना- " तो ठीक है ,आज चलो। ठीक है तुम आज 8:00 बजे मेरे बंगले पहुंचो ,खाना वही होगा। "

ऐसा कहकर शोभना चली गई । महेश 8:00 बजे थाने वाले बंगले में पहुंच गया । बंगले के चपरासी ने उन्हें अंदर बैठने के लिए कहा। महेश बंगले के बैठक के दीवारों पर टगी शोभना की तस्वीरों को ताकता रहा । महेश को विश्वास नहीं हो रहा था कि ये सब उसी लड़की की तस्वीरें हैं जो कॉलेज में गुमसुम रहा करती थी । चपरासी ने आकर पूछा साहब चाय लेंगे महेश ने स्वीकृति में सर हिला दिया। चपरासी चाय बनाने रसोई में चला गया ।इसी बीच बंगले के बाहर से किसी के अंदर आने की आहट हुई । शोभना बंगले के अंदर आ रही थी । उसने बैठक कक्ष में बैठे महेश को देखकर थकान भरे स्वर में कहा-

" अरे ! महेश तुम कब आए ,बहुत पहले "

महेश- " नहीं बस अभी ही -- । लगता है काफी थकी हुई हो । "

शोभना- " अरे ! नहीं ,कुछ लोगों को सुधारते- सुधारते थकान हो जाती है। ये मर्द भी औरत को केवल बिल्ली समझते हैं । जब चाहे पीट दिया जब चाहे पुचकार लिया । "

महेश- " क्या हुआ ? "

शोभना- " वही-- , रोज का लफड़ा किसी ने अपनी बीवी को इतना पीटा कि वह बेहोश हो गई । मोहेल्लेवालो ने कम्प्लेन की । साले को खूब पीटकर आ रही हूं । अच्छा ये सब छोड़ो तुम अपनी सुनाओ ,लेकिन थोड़ा रुको मैं फ्रेश होकर आती हूं । "

शोभना बाथरूम में चली गई । उधर से चपरासी चाय लेकर आया और महेश के सामने टेबल पर रख गया । महेश ने उसे थैंक्यू कहा और चाय की चुस्कियां ने लगा थोड़ी देर बाद शोभना हल्के-फुल्के श्रृंगार करके स्लीपिंग सूट में महेश के सामने आ गई और उसने चपरासी को आवाज लगाई- " एक प्याली मुझे भी चाहिए " शांत बैठे महेश को गौर से देखते हुए शोभना ने पूछा-

" वर्मा जी आपने इतना शांत रहना कब से सीख लिया । मुझे तो विश्वास नहीं होता कि कॉलेज के जमाने का चुलबुला नौजवान जिस पर कई लड़कियां मरती थी आज इतना शांत कैसे हो गया । "

महेश ने धीरे से उत्तर दिया-

" कॉलेज की जिंदगी कुछ और होती है और असल जिंदगी कुछ और--- "

शोभना- " ऐसा क्या हुआ यार महेश कि तुम इतने---- अच्छा छोड़ो यह बताओ कि पुलिस सब इंस्पेक्टर परीक्षा के बाद तुम अचानक कहां गायब हो गए और तुमने सलेक्शन होते हुए भी इस्पेक्टर ट्रेनिंग क्यों छोड़ दी ? यह बात मुझे आज तक समझ में नहीं आई ,जबकि तुम्हारे पापा रिटायर हो

चुके थे और तुम्हारे बहनों की शादी भी नहीं हुई थी । तुम इंस्पेक्टर बनने का जज्बा भी रखते थे ।

महेश- " ट्रेनिंग के समय ही मां बीमार हो गई थी जिसके कारण मैं नहीं जा सका । "

शोभना- " ओ सॉरी यार बट वेरी वेरी थैंक्यू ,तुम्हारे ट्रेनिंग में नहीं जाने के कारण ही मेरा वेटिंग क्लियर हुआ और आज मैं इस पद में हूं । अच्छा छोड़ो --- इन बातों के चक्कर में भूल गई खाने में तुम क्या लोगे चिकन और दारू चलेगी न । मैं तो आज खूब पियूंगी । "

महेश- " केवल चिकन । लेकिन क्या तुम पीती हो ।

शोभना- " क्यों ? नहीं पीना चाहिए । क तुम क्या सोचते हो ? कहीं तुम भी हम औरतों को केवल बिल्ली तो नहीं समझते कालेज के जमाने में तो तुम बहुत मॉडर्न थे। "

महेश- " नहीं , तुम पियो इट्स योर लाइक, पर मैं नहीं लेता । "

शोभना ने चपरासी को आवाज लगाई । रसोई से खाने का भरा ट्रे लेकर चपरासी हाजिर हो गया। ।टेबल पर रख कर जाने लगा । शोभना ने उसे इशारे से कुछ कहा और वह सिर हिला कर चला गया । दोबारा शराब की बोतल और गिलास के साथ हाजिर हुआ । शोभना ने चपरासी को अपने घर जाने के लिए कह दिया । शोभना ने महेश से खाना शुरू करने को कहा और अपने लिए गिलास में शराब डालना शुरू किया ।

महेश खाना खाने लगा शोभना भी चुस्कियां लेने लगी। महेश ने खाना खाते हुए पूछा-

" तुम यहां अकेली रहती हो? "

शोभना ने गंभीर होकर कहा- " महेश तुम तो जानते हो कि मेरे पापा का निधन बहुत पहले ही हो चुका था । पापा के पेंशन से घर चलता था और अभी कुछ 2 साल पहले मम्मी का भी स्वर्गवास हो गया । "

महेश ने हमदर्दी से शोभना की तरफ देखा फिर खाना खाने लगा । तब तक शोभना के तीन-चार पैग से हो चुके थे । शराब ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया था। शोभना के आंखों में आंसू भर आए । शायद वो अपनी मम्मी को याद कर रही थी । कुछ देर स्तब्ध होकर बैठी रही फिर महेश की ओर देखने लगी । महेश ने देखा कि शोभना की आंखें लाल होने लगी है और वो नशे में आ चुकी थी । महेश ने कहा - " शोभना तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए । "

शोभना ने हंसते हुए कहा- " आई नो यार बट -----अच्छा ये बताओ तुमने शादी क्यों नहीं की? अब तो तुम्हारे दोनों बहनों की भी शादी हो चुकी है । कहीं किसी से अफेयर तो नहीं है ।

महेश- " नहीं ऐसी कोई बात नहीं है । "

शोभना को अब नशा चढ पी चुकी थी, उसने महेश को गले से लगा लिया और कहा-

" देखो यार महेश लोग कहते हैं कि नशे में आदमी बहक जाता है ,बट नॉट ,नशे में आदमी सच कहता है । 'रियली यू आर अ नाइस कैरेक्टर ' --- मैं तुम्हारे बारे में सब जानती हूं तुमने इंस्पेक्टर का पोस्ट मेरे लिए छोड़ा था क्योंकि तुम यह मानते थे कि इस पोस्ट की जरूरत मुझे ज्यादा थी । उस रात जब रिजल्ट निकला तब मैं बहुत रोई और मेरी मां भी बहुत निराश हुई । शायद यह सब तुमने खुद देखा था। फिर उस दिन के बाद तुम गायब ही हो गए, ' बट रियली मिस यू बेबी एंड रियली लव यू बेबी '-----

महेश ने शोभना को कुर्सी पर बैठाया और खाना समाप्त करते हुए कहा-

" शोभना शायद तुम ज्यादा नशे में हो और रात भी बहुत हो रही है इसलिए तुम खाना खाकर सो जाओ । मैं भी चलता हूं । "

शोभना- " 'नो नो मिस्टर वर्मा लिसन मी ' ---- अभी मेरी बात अधूरी है इस जमाने में लोग अपना बुखार भी नहीं देते तो तुमने तो मुझे इतनी बड़ी नौकरी दे दी और खुद उस सड़े हुए कमरे में अपनी जिंदगी चला रहे हो ' यु आर अ हीरो--ऑलवेज माय हीरो ,आई लव यू महेश----"

महेश कुछ देर शोभना को देखता रहा फिर बोला-

" देखो शोभना अब मुझे चलना चाहिए कल ऑफिस में ऑडिट है और मुझे रात में फाइलें तैयार करनी है । "

शोभना अपनी कुर्सी से उठ गई और लड़खड़ाते हुए महेश के पास खड़ी हो गई ,उसने महेश की आंखों में आंखें डाल कर कहा-

" आई विल मैरी विद यू ---- मैं तुमसे शादी करना चाहती हूं और इसका जवाब मुझे अभी चाहिए मिस्टर वर्मा "

महेश- " लेकिन मैं इस बारे में कल कुछ कहूंगा जब तुम नशे में नहीं रहोगी।

शोभना- " ठीक है , बट बिना जवाब दिए मैं तुम्हें यहां से जाने नहीं दूंगी और तुम्हें यही मेरे साथ ही रहना होगा । वैसे भी मेरे घर में दो पलंग हैं "

महेश न चाहते हुए भी शोभना को मना नहीं कर पाया । शोभना महेश के सहारे बेडरूम में आ गई । महेश ने शोभना को पलंग पर लिटा दिया और खुद दूसरे पलंग में सोने चला गया । थोड़ी देर बाद शोभना महेश के पलंग में चली गई और उससे लिपट कर सो गई । शोभना का स्पर्श पाकर वह शरमा गया और पलंग से उठने लगा तो शोभना ने उसे जकड़ लिया फिर कहा-

" डोंट वरी मिस्टर वर्मा मैं तुम्हारी इज्जत नहीं लूंटुंगी "

महेश ने पलंग से दोबारा उठने का प्रयास नहीं किया । शोभना ने बत्ती बुझा दी । सुबह जब शोभना की नींद खुली तो महेश दर्पण के सामने अपने बालों को संवार रहा था । शोभना उसके पास आकर उसे मुग्ध होकर देखने लगी। महेश ने जब पलट कर देखा तो उसके पीछे शोभना खड़ी थी । शोभना ने प्रश्न किया-

" क्यों मिस्टर क्या उत्तर है , देखो अगर तुम चाहो तो मैं वो सब छोड़ दूंगी जो तुम्हें पसंद नहीं । "

महेश ने गंभीर मुद्रा में कहा- " देखो शोभना, मेरे ख्याल से तुम्हें शादी के लिए बड़े अफसर मिल जाएंगे और मैं मामूली सा कलर्क तुम्हारे साथ फिट नहीं हो पाऊंगा । फिर तुम्हें बाद में पछताना पड़ सकता है ।

शोभना ने खींझकर कहा- " पछताना तुम्हें पड़ेगा मुझसे शादी करने के बाद क्योंकि शायद तुम्हारे जैसे मर्द मुझ जैसी पत्नी को बर्दाश्त नहीं कर सकेगा । शायद तुम सोचते हो कि मैं तुमसे शादी करके तुम्हारे एहसान की भरपाई कर दूंगी और तुम जैसा मर्द देने में ही अपनी शान समझता है । औरत से लेकर शायद तुम छोटे हो जाओगे , यही बात है न मिस्टर वर्मा । "

महेश- " नहीं ऐसा नहीं है। लेकिन मेरा मानना है कि शादी तभी टिकती है जब पति-पत्नी में ओहदे का ज्यादा अंतर न हो और एक के व्यक्तित्व के सामने दूसरे की पहचान नही ढकनी चाहिए। ----- और सिर्फ यही बात नहीं है । मेरी बूढ़ी मां को घर में काम करने वाली हाउस वाइफ चाहिए और तुम -----

शोभना- " वो रियली , ठीक है मिस्टर वर्मा मुझे जवाब मिल गया ओके , लेकिन मैं तुम्हारे दोनों तर्कों से सहमत नहीं हूं -------- ये सब बहाने हैं "

शोभना ने कुछ देर महेश की तरफ देखा फिर बिना कुछ कहे बाथरूम में चली गई । महेश समझ गया कि शोभना उससे नाराज हो गई है । महेश को ऑफिस के लिए देर हो रही थी इसलिए वह सीधे ऑफिस चला गया ।

उस दिन के बाद शोभना और महेश की मुलाकात नहीं हुई । महेश शोभना से मिलना चाहता था ,लेकिन थाने जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया । दो माह बाद महेश को किसी ने बताया कि थाने में कोई नए इंस्पेक्टर आए हैं , पुराने का ट्रांसफर हो गया है । महेश को अफसोस हुआ, उसके आंखों के सामने शोभना का चेहरा घूमने लगा। वह मन ही मन सोचने लगा कि उसने शोभना को सही जवाब दिया था या नहीं ।

6. उल्टा आदमी

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

रात्रि के सन्नाटे में सोहन के पिताजी कमर दर्द से कराह रहे हैं । सोहन के पिताजी जयलाल को कई दिनों से कमर में दर्द है । उन्होंने गांव के कई बैगाओं से झाड़-फूंक करा लिया है, लेकिन दर्द ज्यों का त्यों बना हुआ है । जैसे-तैसे रात खत्म हुई । सुबह उन्हें सोहन के स्कूल जाना है इसलिए सुबह नाश्ता करके वे इसके लिए तैयार हो गए । अभी भी उनके कमर में दर्द है । उन्होंने अपनी कमर में तेल-मालिश करा लिया और फिर जाने के लिए तैयार हो गए तो उनकी पत्नी ने कहा-

" कहां जा रहे हो ? "

जयलाल -

" सोहन की मां , आज सोहन के स्कूल में मुझे बुलाया गया है । गुरुजी ने पता नहीं किस बात को लेकर बुलाया है । अभी कमर दर्द ठीक है लेकिन पता नहीं शाम को क्या जादू -टोना हो जाता है तो कमर दर्द करता है। "

इतना कहकह जयलाल अपनी साइकिल से सोहन के स्कूल जाने लगे । स्कूल पहुंचकर सीधा सोहन के कक्षा में पहूंचे-

जयलाल- " नमस्ते मास्टर साब ! मैं सोहन का पिता हूं "

मास्टर- " आइए आइए बैठिए , मैं सोहन का साइंस टीचर हूं । सोहन का विज्ञान मॉडल चुना गया है । "

जयलाल ने खुश होकर कहा- " यह तो खुशी की बात है मास्टर साब ! सब आपकी मार्गदर्शन और कृपा का परिणाम है । "

मास्टर- " लेकिन सोहन को इस मॉडल के साथ दिल्ली जाना है । क्या आप इसे भेजेंगे ? "

जयलाल- " मास्टर साब ! पर गायों की देखरेख करने वाला कोई नहीं है और मैं अपनी कमर दर्द के मारे परेशान रहता हूं जिससे उनका देखभाल करना कठिन होता है "

मास्टर साहब ने आश्चर्य से कहा- " कमर दर्द तो क्या किसी डॉक्टर को नहीं दिखाया ?

जयलाल- " जी नहीं साहब , यह दूसरे प्रकार का कमर दर्द है ।"

मास्टर- " देखिये , दर्द किसी भी प्रकार का हो ,डॉक्टर को तो दिखाना ही चाहिए। "

मास्टर साहब के सामने सर हिला कर जयलाल मास्टर बाबू को नमस्ते कहकर वापस घर आ गया । जयलाल के जाने के बाद मास्टर साहब ने सोहन को समझाया कि अपने पिताजी का ठीक से इलाज करवाओ । स्कूल से आकर सोहन ने यही बात दोहराना शुरू कर दिया-

" मास्टर साहब ने कहा है कि शहर में एक बड़े डॉक्टर हैं और वह अच्छा इलाज करते हैं। "

जयलाल ने सोहन को डाटते हुए कहा-

" मैं गांव के वैद्य से इलाज करा लूंगा ,मैं शहर नहीं जाऊंगा । "

शाम को जयलाल गांव के वैद्य से दवाई- गोली ले कर आ गए । चार दिन दवाई खाने के बाद भी उनके कमर का दर्द नहीं गया । रात भर कराहते रहे । सुबह सोहन ने पिता से कहा-

" तभी मैंने आपको कहा था कि शहर के डॉक्टर के पास जाइए । "

जयलाल ने गुस्से से कहा-

" चुप रहो, तुम्हारे चक्कर में मेरा कितना खर्च हो गया और तुम अपना ज्ञान अपने पास रखो । गुरुजी की भाषा मत बोलो । "

सोहन ने डरते हुए धीरे से कहा- "   -- -तो अब क्या करेंगे ? "

जयलाल-   " मैं अब अपने तरीके से कमर दर्द का इलाज खुद कर लूंगा-- । हमारे दादा कहा करते थे कि कितना भी कमर दर्द हो उलटा पैदा हुआ आदमी लात मार दे तो ठीक हो जाता है। "

सोहन- " उल्टा आदमी --- मतलब उल्टा पैदा हुआ आदमी दिखता कैसा है ? "

जयलाल- " वो भी हमारे जैसा ही दिखता है परंतु उल्टा पैदा होता है । "

सोहन- " लेकिन उसे उल्टा पैदा हुआ आदमी क्यों कहते हैं ? "

जयलाल- " क्योंकि सब लोग जिस तरह पैदा होते हैं, वह वैसा नहीं होता । "

सोहन- " सब लोग कैसे पैदा होते हैं ? "

जयलाल ने झिड़ककर कहा- " चुप रे ! आजकल तू ज्यादा बोलता है । कहां से सीख गया इतना बोलना ?। "

सोहन ने सर झुका लिया फिर धीरे से पूछा-

" पिताजी लेकिन हम कैसे जानेंगे कि कौन उल्टा पैदा हुआ है जिससे आप का इलाज हो जाए । "

जयलाल ने कहा- " हां , हम उसके माता- पिता , , पड़ोसी या फिर अस्पताल जिसमें वह पैदा हुआ वहां पता करेंगें । तू भी उल्टे आदमी की खोज में मेरी मदद करना । "

रात को सोहन उल्टे आदमी के बारे में सोचते सोचते सो गया । सुबह जब सोहन स्कूल जाने लगा तब उसने तय किया कि आज मुझे उल्टे आदमी की तलाश करना है। सोहन स्कूल पहुंच कर अपने शिक्षक से पुछने लगा कि उल्टा आदमी किसे कहते हैं ? सोहन के शिक्षक ने कहा-

" जो मनुष्य उल्टा सोचता है ,उल्टा काम करता है, समाज से अलग काम करता है । सही कार्य के बदले गलत कार्य करता है मेरे हिसाब से वही उल्टा आदमी है । "

सोहन गुरुजी की बातों को समझ गया। दोपहर मध्यान भोजन की छुट्टी में सभी शिक्षक आपस में बात कर रहे थे । बडे गुरुजी ने कहा-

" इस बार पंचकुवंर को सरपंच नहीं बनाना है। "

दूसरे गुरुजी ने पूछा- " क्यों ? "

गुरुजी ने जवाब दिया-

" अरे भाई वह सब काम तो अपने पति बहोरिक से कराती है, वह भी उल्टा-पुल्टा । हमारे मोहल्ले में नाली और सड़क उसने बनवाया था लेकिन सब टूट- फूट गए । गांव में कुछ भी विकास नहीं कराया । इतना ही नहीं बहोरिक अपनी दूसरी पत्नी को मोटरसाइकिल में इधर से उधर घूमाता रहता है और पंचकुंवर (जो सरपंच है) से झगड़ता रहता है । बड़ा उल्टा व्यवहार है बहोरिक का । "

बड़े गुरुजी के बातों को सोहन ध्यान से सुन रहा था । सोहन सोचने लगा-

" हां जरूर बहोरिक उल्टा पैदा हुआ होगा । तभी तो उल्टे-पुल्टे काम करता है । "

सोहन यह सोचकर खुश हो गया कि उल्टा आदमी मिल गया । अब मेरे पिताजी के कमर दर्द का इलाज हो जाएगा । स्कूल से आकर सोहन ने यह बात अपने पिता जी को बताई। जयलाल भी खुश हो गया । अब दोनों बहोरिक के घर जाने को तैयार हो गए । उन्होंने बहोरिक के घर पहूंचकर सरपंच पंचकुवंर से पूछा-

" बताइए जरा, बहोरिक कहां है ? घर में है या नहीं । "

पंचकुवंर ने जवाब दिया - " उसका कोई टाइम- टेबल नहीं है । घूम रहा होगा शराब पीकर । "

पंचकुवंर के गुस्से को देखकर जयलाल ने कुछ नहीं कहा । उसने इशारे से सोहन को बाहर बुला लिया और बाहर एक

ठेले में पुछताछ करने लगा । ठेलेवाले ने बताया कि बहोरिक अभी अपने दोस्त बुधराम के पास होगा ,उसके घर में । जयलाल और सोहन वहां पहुंच गए। पहुंचकर जयलाल ने बहोरिक से कहा-

" सुनो भाई ! मेरे कमर में बहुत दर्द है । सुना है कि तुम उल्टे पैदा हुए हो और तुम मेरा कमर दर्द ठीक कर सकते हो ।

बहोरिक ने आश्चर्य से उत्तर दिया- " क्या ? मैं उल्टा पैदा हुआ हूं। तुम्हें कैसे पता चला ? "

सोहन- " आपके काम करने के ढंग से ।"

बहोरिक ने गुस्से से कहा- " ---- क्या मतलब ? "

जयलाल- " नहीं भाई हमने तुम्हारी मां से पता किया है--- "

जयलाल ने किसी भी तरीके से बहोरिक को समझा-बुझाकर अपनी कमर में लात मारने के लिए मना लिया और अपनी कमर में लात मरवाकर वह सोहन के साथ खुशी-खुशी घर आ गया । दूसरे दिन उसे लगा जैसे उसके कमर का दर्द कुछ कम हुआ है । लेकिन कुछ दिनों बाद दर्द वैसा ही रहा तो उसके मन में यह प्रश्न हुआ कि कहीं बहोरिक सीधा तो पैदा नहीं हुआ था। लगता है सोहन ने पता लगाने में कुछ गड़बड़ी कर दी । उसने सोहन को बुलाकर कहा-

" लगता है बहोरिक उल्टा पैदा नहीं हुआ है ,अब हमें किसी दूसरे आदमी की तलाश करनी होगी। "

कुछ दिनों तक किसी ऐसे उल्टे आदमी का पता नहीं चला । एक दिन जयलाल बाजार से वापस आ रहा था । उसने रास्ते में भीड़ देखा ,भीड़ के पास जाने पर उसने देखा की एक बूढ़ी महिला अपने बेटे को खूब डांट लगाकर झगड़ रही थी। बूढ़ी महिला ने भीड़ की ओर इशारा करते हुए कहा-

" देखो भाइयों ! यह मेरा बड़ा लड़का है और इसने मेरी पूरी जमीन अपनी पत्नी के नाम पर करा लिया है । इसने हमें बेघर कर दिया है । मैं अपने छोटे लड़कों के साथ इधर से उधर भटक रही हूं और यह जोरू का गुलाम अपनी बीवी के इशारों पर चलता है और मुझसे मुंह छुपाए- छुपाए फिरता है । आज मैंने इसे बाजार में पकड़ लिया । मैं ऐसे औलाद को जन्म देकर पछता रही हूं । मेरे कोख से उल्टे-पुल्टे काम करने वाला कैसे पैदा हो गया । ये तो मुझे समझ ही नहीं आता । इसने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। "

बुढिया की बातों को सुनकर जयलाल को दुख हुआ । लेकिन इस बात की खुशी थी कि एक और उल्टे आदमी का पता चल गया। भीड़ समाप्त होने तक जयलाल ने इंतजार किया। फिर उस बुढिया के बड़े बेटे के घर का पता लगाकर वहां पहुंच गया । जयलाल ने अपने पुराने तरीके से कहा- " सुनो भाई मैं सुना हूं कि तुम नस बैठाने का काम करते हो । मेरे कमर की नस बैठा देते , मुझको कमर में बहुत दर्द है । "

उस आदमी ने आश्चर्य से कहा- " पर मैं तो ऐसा कोई कार्य नहीं करता हूं । "

अब जयलाल के पास इसका कोई उत्तर नहीं था । जयलाल ने सोचा कि अब क्या करूं फिर उसने दूसरी युक्ति लगाई कहा-

" मैंने तो सुना है तुम उल्टे काम करते हो ,अपनी बीवी के इशारे पर नाचते हो और अपनी मां को घर से निकाल दिया है । तुम जोरू के गुलाम हो ,जिस बीवी के इशारे पर तुम नाचते हो वह जरूर काली-कलूटी होगी ---- "

जयलाल की बात सुनकर उस आदमी को गुस्सा आ गया । उसने जयलाल को पकड़ लिया और कहा-
" तू कौन है यह सब बोलने वाला ? तेरी कमर में दर्द है न । तो मैं कमर का दर्द दूर कर देता हूं । "

ऐसा कहकर उसने जयलाल के कमर में लात मारी । लात कुछ ज्यादा ही जोर से लगा । लेकिन जयलाल का काम हो चुका था । वह कुछ न कहते हुए वापस घर चला आया । रात को कमर का दर्द और बढ़ गया । इस पर सोहन ने कहा-

" लगता है उस आदमी ने ज्यादा जोर से लात मारी है, तभी दर्द बढ़ गया है ---- मैंने तो पहले ही कहा था , आपको डॉक्टर के पास जाना चाहिए । "

जयलाल ने कुछ नहीं कहा। मन में सोचने लगा कि जो पटवारी दुसरे की जमीन दुसरे के नाम पर कर देता है । भ्रष्टाचार करता है। निश्चय ही वह उलटा आदमी होगा ।

दुसरे दिन जयलाल ने सोहन से कहा-

" निश्चित ही वो पटवारी उल्टा आदमी होगा तुम मेरे साथ उसके घर चलो । "
सोहन ने असहमति भाव से उत्तर दिया - " लेकिन,--- "

जयलाल ने सोहन को घूरते हुए कहा- " देखो ,मुझे लगता है कि पटवारी जरूर उल्टा आदमी है, ये आखरी बार है--- "

अब जयलाल और सोहन पटवारी कार्यालय पहूँच गए। जयलाल ने सोहन को आगे कर दिया । नाराज सोहन सीधे पटवारी के पास जाकर बोला-

" मेरे पिताजी कहते हैं कि आप उल्टे आदमी हैं -- क्या --

पटवारी ने सोहन को ऊपर से नीचें तक देखा फिर कहा-

" कहाँ हैं तुम्हारे पिता ? "

सोहन ने अपने पिता की तरफ इशारा कर दिया। पटवारी ने जयलाल को बुलाकर कहा-

" लगता है तुम और तुम्हारा लड़का दोनों पागल हो--

सोहन- " लेकिन उल्टे तो आप हैं-- "

सोहन की बात सुनकर पटवारी को क्रोध आ गया । उसने कहा- " अगर तुम दोनों यहाँ से नहीं भागे तो मैं पुलिस बुला लूंगा-- "

जयलाल ने सोहन को भागने के लिये इशारा किया। दोनों हांफते हुए घर पहुंचे। हांफते हुए जयलाल ने कहा -

" सचमुच हम किसी उल्टे आदमी के चक्कर में फसने वाले थे , जान बची लाखों पाए --- तुम और तुम्हारे गुरुजी ठीक कहते हो, मुझे किसी अच्छे डॉक्टर से अपने कमर का इलाज कराना चाहिए । "

7. बारात

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

पूजा की आज देर से आंख खुली । पड़ोस में शादी का गीत-संगीत देर रात तक चलता रहा। पूजा देर तक एक गीत - संगीत में खोए रही इसलिए उसे ठीक से नींद नहीं आई । आज सुबह उसके पति सतीश ने उसे जगाया -

" पूजा जल्दी उठो , आज मुझे काम में जाने में लेट होगा । "
पूजा- " ठीक है जी मैं जल्दी से आपके लिए नाश्ता और टिफिन तैयार कर देती हूं । चौका- बर्तन बाद में करुंगी । "

पूजा ने सतीश को टिफीन देकर फैक्ट्री जाने के लिए विदा कर दिया। लेकिन उसकी सास ने हमेशा की तरह मौका पाकर शिकायतों की झड़ी लगा दी-

" पूजा कितनी बार कहा है सवेरे जल्दी उठा करो । हर बात में मनमानी करना अच्छा नहीं होता। बड़ी सुनेगी तो मुझे सुनना पड़ेगा कि मैं छोटी की नाज- नखरे क्यों उठाती हूं । "

सास की बात की सुनकर पूजा ने कुछ नहीं कहा। उसे मालूम था कि कुछ कहने पर सासु बात का बतंगड़ बना देगी

। वैसे भी अभी पूजा को बहुत काम करना है । चौका- बर्तन करने के बाद पूजा अपने बेटे राजू को स्कूल भेजने की तैयारी करने लग। छः साल का राजू पास ही के कान्वेंट स्कूल में कक्षा 1 में पड़ता है । राजू जब स्कूल जाने के लिए बस्ता निकाल रहा था तब पूजा ने पूछा-

" क्यों रे ! आज उम होमवर्क नहीं मिला क्या?"

राजू ने कोई जवाब नहीं दिया
पूजा- " क्यों राजू आज होमवर्क नहीं करना है?"

राजू ने गुस्से में उत्तर दिया- " नहीं करना है "

पूजा ने आश्चर्य से पूछा- " क्यों ? "

राजू- " तुम्हारे बताएं होमवर्क को टीचर गलत कर देती है और कहती हैं कि किस 'उल्लू के पट्ठे' ने होमवर्क कराया है । "

पूजा ने गुस्से से कहा- " अपने बाप से होमवर्क करा लेना मैं तो मूर्ख हूं । तुम्हारा बाप स्कूल का टॉपर है ।

राजू ने कौतूहल से पूछा-

" पापा कौन से स्कूल के टॉपर हैं ? "

पूजा- " उल्लू के पट्ठों के स्कूल के "

राजू को कुछ समझ नहीं आया। राजू नाश्ता करने लगा । कुछ देर बाद स्कूल चला गया ।

राजू के जाने के बाद पूजा मन ही मन सोचने लगी कि अगर मैं ज्यादा पढ़ी लिखी होती हो राजू को होमवर्क कराने में समस्या नहीं होती, पर राजू के पापा के चक्कर में मुझे कक्षा 12 की पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी । लेकिन पूजा अच्छी तरह से जानती थी कि इसमें सिर्फ सतीश की ही नहीं पूजा की भी गलती थी । जब सतीश ने पूजा को घर से भागकर प्रेम विवाह करने को कहा तो वह बिना सोचे समझे तैयार हो गई थी और शायद पूजा पढ़ने में भी मैं भी उतनी अच्छी नहीं थी। सतीश के प्रेमपाश में बंधने के बाद उसने पढ़ाई से नाता तोड़ लिया था । सतीश तो पहले से ही अपनी पढ़ाई से छोड़ चुका था और पूजा के पीछे दीवाना हो गया था । प्रेम विवाह के बाद कुछ साल उन्हें बाहर रहना पड़ा था क्योंकि उन्होंने बिरादरी- जाति से बाहर विवाह किया था । कई साल बाद बड़ी मुश्किल से सतीश के घर वालों ने इस शादी को माना और सतीश पूजा के साथ अपने घर वापस आ गया । सतीश की मां सतीश बहुत प्यार करती है पर उसने पूजा को आज तक माफ नहीं किया है। पूजा यह सोचते -सोचते खाना पका रही है । दूध उबल कर गिरने लगा । पूजा ने गिरे दूध को कपड़े से पोछ दिया ताकि उसकी सास न देख पाए । खाना खाकर बिस्तर में लेटते ही पूजा को नींद आ गई । कुछ देर बाद पूजा जैसे ही नींद से जागी । सतीश फैक्ट्री से वापस आ चुका था और राजू स्कूल से । पूजा ने सतीश को कहा-

" आज जल्दी आ गए "

सतीश- " नहीं रोज इसी समय आता हूं ,
लगता है मेमसाब ! घोड़े बेचकर सो रही थी और काम ही क्या है ---- "

पूजा- " नहीं जी , यूं ही आंख लग गई थी । शायद कल रात ठीक से सो नहीं पाई थी, इस वजह से । "

सतीश- " हां , बारात के सपने जो देखा करती हो ।

पूजा- " हां ,बारात चीज ही ऐसी है कि----"

सतीश- " अच्छा तो अपने बारात में क्या कर रही थी ? "

पूजा- " मेरे दूल्हे ने बारात कहां आने दिया ? "

सतीश- " तो क्या बारात वाला दूल्हा ढूंढ लेती ? मैं तो बच जाता --- और जब तुम्हें बारात वाली शादी पसंद थी तो मेरे चक्कर क्यों काटती थी "

पूजा ने भारी आवाज में जवाब दिया-

" मैं चक्कर काटती थी कि आप ? --- मेरे पापा इतने विरोधी थे इस शादी के ,लेकिन आपने---- "

सतीश ने भी ऊंचे आवाज में जवाब दिया-

" आपने क्या ?-- तुम्हारे कल्लू मियां पापा कोई विरोधी-फिरोधी नहीं थे , उन्हें तो अच्छा लगा कि बिना दहेज के बिटिया की शादी हो गई और शादी का खर्च भी बच गया और बकरा कौन बना मैं ? "

पूजा ने गुस्से सें कहा-

" क्या कहा ? मेरे पापा को कल्लू मियां-- "

सतीश- ' तो और क्या ? काले आदमी को कोई धरमेंदर थोड़ी कहेगा ? "

पूजा- " अच्छा तो आप कितने गोरे हैं ? "

सतीश का चेहरा क्रोध से लाल हो गया और उसने जोर से कहा-

" तो क्यों ? इस कल्लू मियां के पीछे पड़ी थी आप मिस सुंदरी--- "

पूजा कुछ देर चुप रही । वह समझ गई कि सतीश का पारा गर्म हो चुका है और झगड़ा बढ़ने पर सासू और जेठानी भी आ सकते हैं इसलिए अपने विवाद को समेटते हुए उसने मुस्कुराकर कहा-

" अजी! मैं इस कल्लू मियां के पीछे इसलिए पड़ी थी क्योंकि यह मेरा धरमेंदर है।"

सतीश का क्रोध से भरा चेहरा कुछ नरम हो गया, सतीश ने हंसी को जैसे-तैसे रोका । चेहरे को सख्त बनाने का प्रयास करने लगा और कमरे से बाहर जाने लगा । पूजा ने रोकते हुए कहा-

" अजी मेरे धरमेंदर आज बाजार से कुछ सामान लाना है। "

सतीश ने बनावटी क्रोध से कहा- " जी मैं धरमेंदर नहीं फटीचर हूं और मेरे पास पैसे नहीं है । "

यह कहते हुए सतीश कमरे से बाहर चला गया। पूजा घर के काम में लग गई क्योंकि शाम को पड़ोस में होने वाली शादी में जाना है । दो घंटे बाद जब सतीश घूमकर घर लौटा तो पूजा ने पूछा-

" अजी ! खाना बन गया है कहो तो खाना लगा दूं ? , जल्दी खाना खा लीजिए पड़ोस की शादी में जाना है । "

सतीश- " मैं नहीं जाऊंगा , मुझे शादी-वादी बारात-वारात पसंद नहीं । तुम्ही जाओ और बारात को घूरते रहो । "

कुछ सोचते हुए सतीश पलंग पर लेट गया। पूजा ने कुछ कहना उचित नहीं समझा । थोड़ी देर बाद सड़क के उस पार से आती भड़काऊ संगीत की आवाज पूजा के कान में पड़ी ।

पूजा का मन मचल गया । उसने सोचा कि पास जाकर बारात को देखें । पूजा ने लेटे हुए सतीश को चुपके से देखा । सतीश सो चुका था । अब पूजा से रहा नहीं गया । वह छत पर चली गई और दूर से आते बारात को देखने लगी । बारात पास आई तो पूजा को दूल्हा घोड़े पर बैठा दिखा । पूजा के चेहरे पर हंसी आ गई और वह सोचने लगी कि कितने इज्जत के साथ दूल्हा घोड़े पर बैठा है और बाराती जैसे उसे सर आंखों पर लिए हैं । हर बाराती गर्व से आगे बढ़ रहे हैं । कोई नाच रहा है । ये सब सोचते-सोचते पूजा को लगा कि दूल्हा सतीश है ,पर अगले ही क्षण उसे लगा कि वह कोई और है । शायद सतीश को दूल्हे के रूप में देखना उसकी कल्पना थी । पूजा जब छत के बाएं किनारे गई तो उसने सतीश को वहां पाया । शायद सतीश भी पूजा की तरह बारात को देख रहा था । पूजा ने कहा -

" आप कब जाग गए ? "

सतीश- " बस अभी तो-- "

पूजा - " अभी --- कि बहुत देर से बारात देख रहे हैं ? "

सतीश ने कुछ क्रोधित स्वर में कहा-

" बारात तुम्हें देखना था , मुझे नहीं । कैसा लगा घोड़े वाला दूल्हा ?

पूजा ने थोड़ी देर में उतर दिया-

" अभी चलिए मेरे बिना घोड़े वाले दूल्हे खाना खाते हैं । "
यह कहकर पूजा और सतीश अपने कमरे में आ गए

8. डायन मां

डॉ.दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

शाम के समय चिड़ियों के चहचहाहट के साथ दो महिलाओं के झगड़ने की आवाज भी आ रही थी। वह दोनों पता नहीं किस बात पर झगड़ रहे थे । झगड़ा धीरे-धीरे बढ़ता गया । पहली महिला ने कहा-

" मेरे पति पर नजर लगाना छोड़ दे नहीं तो ---- "

दूसरी महिला ने कहा-

" मुझे तेरे पति से कोई मतलब नहीं है । मैं तो केवल अपने लकड़ियों के बारे में पूछ रही हूं । मैंने कल रात तेरे पति को यहां से लकड़ियां ले जाते देखा है । "

पहली महिला जिसका नाम सरोज है, उसने कहा-

" ओ डायन ! तूने कैसे कह दिया कि मेरे पति ने तेरी लकड़ियां चुराई है । तुने अपने पति और बेटी को खा लिया ,अब मेरे पति के पीछे पड़ी है। "

दूसरी महिला फूलमती ने जवाब दिया- " तेरा पति कामचोर है और शराब के लिए उसने मेरे लकड़ियों को बेच दिया है --- "

इसके बाद दोनों महिलाओं का झगड़ा और बढ़ गया । सभी पड़ोसी अपने-अपने खिड़कियों से इस झगड़े को देखते- सुनते रहे । लेकिन पास जाने की हिम्मत किसी की नहीं हुई । सब लोग फूलमती से डरते हैं । गांव की पार्वती जानती है कि सरोज के पति ने फूलमती की लकड़ियां चुराई है । लेकिन वो इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहती । दोनों महिलाएं एक-दूसरे के बाल पकड़कर मारपीट करने लगी । अंत मे , नशे में टुन्न सरोज के पति ने सरोज को वापस बुला लिया । रातभर सरोज और उसके पति सोच विचार करते रहे। सरोज ने कहा-

" सुबह शहर जाना है यहां नहीं रहना है । आपको शहर में काम मिल जाएगा और सबसे बड़ी बात यह है कि अब डायन से झगड़ा हो गया है । गांव से जाना ही होगा । "

सुबह-सुबह दोनों पति पत्नी गांव छोड़ कर चले गए। सुबह होते ही गांव के गलियों में चहल-पहल बढ़ गई । सब लोग अपने- अपने काम में लग गए । लेकिन तभी कुछ लोग रास्ते से हटने लगे, कुछ लोग अपने घरों में चले गए ,कुछ लोगों ने मुंह मोड़ लिए । एक बच्चे ने आवाज लगाई-

" -- डायन आ रही है--- "

और लड़का दौड़कर अपने घर में घुस गया। उधर से फूलमती आ रही थी। उसे गांव के बाहर मिल में काम करने

जाना है । उसे थोड़ी देरी हो गई । मुनीम दयाराम जरूर नाराज होंगे । मुनीम को तो बहाना चाहिए । फूलमती की मजबूरी का फायदा उठाकर मुनीम आधी मजदूरी ही देते हैं क्योंकि कहीं दूसरे जगह पर फूलमती को काम नहीं मिलता है । फूलमती मिल के अंदर आ गई । मुनीम ने आवाज दिया-

" कैसे फूलमती आज तुम देर से आई हो । आज तुम्हारी मजदूरी कटेगी । "

फूलमती- " कोई नई बात तो नहीं है मुनीम जी ,तुम किसी न किसी बहाने कम मजदूरी देते हो । "

मुनीम- " क्या कहा तुने ? मैं नहीं जानता क्या ? गांव के लोग तेरे बारे में कैसी - कैसी बातें करते हैं । उसके बाद भी मैं तुझे काम पर रखता हूं ।

फूलमती- " कैसी-कैसी बातें करते हैं----- मुझे डायन कहते हैं न ? डायन होंगी उनके घर की बहू- बेटियां । "

मुनीम चुप हो गए , पता नहीं क्या सोचकर । फूलमती अपने काम में लग गई । शाम को मजदूरी देने के समय मुनीम ने उसके बीस रुपये काट लिए । फूलमती को हिसाब-किताब नहीं आता , उसने पैसे लिए और चल पड़ी । रास्ते के किराना दुकान से उसने राशन लिया और बिस्किट का एक पैकेट लिया , क्योंकि पड़ोसन पार्वती का 6 साल का बेटा बिट्टू उससे हमेशा बिस्किट मांगता है । फूलमती छिपाकर
बिस्किट देती है ।

फूलमती को घर पहुंचते रात हो गई । उसने जैसे-तैसे खिचड़ी बना ली और खाकर सो गई । अर्धरात्रि को उठकर रोने लगी , शायद उसने कोई सपना देखा था -

" मैं क्या करूं बेटी मैं तुझे नहीं बचा सकी । चंदा ! मेरी बेटी अगर मैं तुझे शहर ले जाती तो तेरा इलाज हो जाता , तू बच जाती । लेकिन मेरी किस्मत फूटी थी जो मैंने गांव में झाड़-फूंक कराया । आज अकेले जीवन जी रही हूं । "

फूलमती को नींद नहीं आ रहा थी । बेटी की याद आ रही थी। वह अपने घर से बाहर निकल गई । पुराने पीपल के पास गई ,पीपल को देखकर और रोने लगी क्योंकि इसी पीपल में उसकी बेटी चंदा का क्रिया-कर्म किया गया था । फूलमती के शरीर में कपकपी दौड़ गई उसका शरीर हिलने लगा और वह जमीन पर गिर गई । उसी समय पड़ोसन पार्वती लघुशंका के लिए उठी थी । उसने देखा कि कैसे फूलमती अपने हाथ-पैर हिला रही है । उसे लगा कि फूलमती पुराने पीपल के पास कोई तांत्रिक क्रिया कर रही है । वह डर गई । सुबह पुरे गांव में हल्ला हो गया कि पार्वती ने फूलमती को तांत्रिक क्रिया करते देखा है ।

एक दिन जब पार्वती अपने बेटे बिट्टू को स्कूल लेने गई तो बिट्टू के दोस्त ने बताया कि डायन ने बिट्टू को बिस्किट दिया है । पार्वती ने बेटे को समझाया-

" कभी फूलवती की दी हुई चीज न खाना और घर नहीं जाना वो डायन है । "

बिट्टू- " मैं जाऊंगा वो मुझे प्यार करती है "

पार्वती इस बात को सुनकर नाराज हो गई। उसने बिट्टू को झापड़ मार दिया । बिट्टू रोने लगा । बिट्टू की आवाज सुनकर नये शिक्षक सूरज आ गए । पार्वती से उसने पूछा- " क्या बात है ? आपने बिट्टू को इतने जोर से क्यों मारा ? "
पार्वती- " लड़का पागल हो गया है । कहता है मैं फूलवती के घर जाऊंगा । "
सूरज- " तो क्या हुआ ? "
पार्वती- " आप शायद नहीं जानते, फूलमती डायन है । वह मेरे बच्चे को खा जायेगी . "
सूरज- " क्या बात करती हैं ? डायन यह क्या होता है ? कोई डायन नहीं है यह सब आप लोगों का अंधविश्वास है---------
पार्वती- " आप पढ़े-लिखे लोग भले न मानो लेकिन वह डायन है । "

नये शिक्षक सूरज गांव में नये आए हैं । उन्हें पार्वती की बात ठीक से समझ नहीं आई । उन्होंने हेड मास्टर से पूछा हेड मास्टर ने फूलमती के बारे में सब कुछ बता दिया । लेकिन सूरज को विश्वास ही नहीं हुआ । उन्होंने इस बात को टालते हुए कहा-

" हेड मास्टर साहब मैं कई दिनों से आपके मकान में रह रहा हूं ---- ऐसा कब तक चलेगा । मुझे अपने लिए मकान ढूंढना ही होगा । "
हेड मास्टर ने जवाब दिया- " देखो सूरज यहां मकान ढूंढना कठिन है । एक तो मकान कच्चे हैं , दूसरा तुम कुंवारे हो इसलिए यहां तूम्हें कोई मकान किराये से नहीं देगा । तुम हमारे स्कूल की शिक्षिका विद्या से पूछ सकते हो उनके घर में एक कमरा खाली है । यदि उनके पिताजी मान जाए तो मिल सकता है। "

दूसरे दिन सूरज विद्या के घर गए और उनके पिताजी से मिलकर कमरा किराये से मांगा । विद्या के पिताजी ने कमरा देने से मना कर दिया उन्होंने कहा कि मैं अपने घर में किसी कुंवारे लड़के को नहीं रख सकता । सूरज को यह बात समझ में आ गई कि कुंवारे को यहां कमरा नहीं मिलने वाला है । इसलिए उन्होंने अपने आपको शादीशुदा बताने का फैसला लिया और विद्या के पड़ोसी डॉक्टर मंगतराम से किराए के कमरे को मांगने चले गए । उन्होंने वहां अपना परिचय विवाहित पुरुष के रूप में दिया जिससे मंगतराम ने उन्हें कमरा किराए से दे दिया। मंगतराम अपने घर में अकेले रहते थे क्योंकि उनकी पत्नी का निधन हो चुका था और सब बच्चे शहर में पढ़ते थे ।

किराये का कमरा मिलने के बाद उस रात सूरज को चैन की नींद आई । आधी रात के बाद सूरज को दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनाई दी । उसे ऐसा लगा कि कोई महिला दर्द से कराह रही है । सूरज ने अपना दरवाजा

खोला तो देखा कि डॉक्टर मंगतराम के दरवाजे को कोई महिला खटखटा रही है । वह महिला दर्द से तड़पते हुए इलाज के लिए गुहार लगा रही थी । सूरज इसे मंगतराम का मामला समझ वापस अपना दरवाजा बंद करने लगा। तभी उसे ऐसा लगा कि वो महिला गिर पड़ी है । सुरज ने महिला के पास पहुंचकर उसे उठाया । महिला बेहोश हो चुकी थी और उसका शरीर ठंडा पड़ने लगा था । सूरज ने मंगतराम का दरवाजा खटखटाया। थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला। मंगतराम आंखें मलते हुए पुछने लगे-

" कौन है भाई ? ------ अरे ! सूरज ये --ये कौन है ? "

सूरज- " ये कोई मरीज है । आपको पुकार रही थी और बेहोश होकर गिर पड़ी । "

मंगतराम ने उसे पहचानते हुए कहा- " अरे ! ये तो फूलमती है । मैं इसका इलाज नहीं कर सकता --- गांव वाले मुझसे नाराज हो जायेंगे , नहीं - नहीं --- "

सूरज- " क्यों ? --- अगर इसका इलाज नहीं किया गया तो ये मर जायेगी । "

मंगतराम- " तुम नहीं जानते ये फूलमती है, डायन है, गांव वालों ने इसकी बेटी चंदा का इलाज मुझे नहीं करने दिया था, इलाज के अभाव में चंदा मर गई थी । "

सूरज- " बडे शर्म की बात है-- आप जैसे लोग इस अंधविश्वास को मानते हैं और आपके इलाज के बिना एक

बच्ची भी मर गई थी-- आप कैसे डॉक्टर हैं । आपको इसका इलाज करना होगा "

सूरज ने उस बीमार महिला को दवाखाना में लेटा दिया। सूरज की बात ने मंगतराम को सोचने पर मजबूर कर दिया था । उसने महिला का इलाज करना शुरू कर दिया। महिला का शरीर ठंडा पड़ चुका था ।

मंगतराम ने जांच करने के बाद बताया- " देखो सूरज इसे जल्द शहर ले जाना होगा --- नहीं तो-- मेरे पास इसके लिए दवाइयां भी नहीं होगी । हम एंबुलेंस का इंतजार भी नहीं कर सकते हैं देर हो जायेगी । मेरे कार में चलते हैं । "

रात को ही दोनों फूलमती को लेकर शहर चल दिए । इलाज कराकर सुबह वापस आ गए । फूलमती को उसके घर पहुंचा आये। मंगतराम ने सूरज को फूलमती का हालचाल पुछते रहने की सलाह दी । सूरज रोज फूलमती का हालचाल पुछने जाने लगा। गांव में ये बात फैल गई कि नये गुरुजी फूलमती के घर जाते हैं। लोग तरह-तरह की बातें करने लगे ।

कुछ दिनों बाद डॉक्टर मंगतराम के बच्चे शहर से वापस आ गए तो मंगतराम ने सूरज से कमरा खाली करा लिया । सूरज ठंड के दिनों में स्कूल के प्रांगण में रहने लगे । उन्हें ठंड लग गई। एक दिन दोपहर में धूप में बैठे-बैठे बुखार से अचेत होकर गिर गए । उस दिन स्कूल में केवल शिक्षिका विद्या थी । विद्या ने सूरज के चेहरे पर पानी डाला तो उसे होश आया । विद्या के सहारे

सूरज कुर्सी में बैठ गए । उनको बहुत ठंड लग रही थी । ठंड को कम करने के लिए सूरज ने विद्या को अपनी बाहों में जकड़ लिया । विद्या ने
छुडाने का प्रयास किया । थोड़ी देर बाद सूरज ने विद्या को छोड़ दिया । विद्या ने स्कूल के एक बच्चे को डॉक्टर बुलाने के लिए भेजा । डॉक्टर मंगतराम सूरज की तबियत सुनकर दौड़े आ गए। जांच के बाद डॉक्टर ने कहा-
" सूरज को निमोनिया हो गया है। अब स्कूल में नहीं रहना चाहिए । तुम मेरे घर चलो। "

विद्या- " नहीं सूरज मेरे घर जायेंगे, मैं पापा को मना लूंगी । "

उसी समय वहां फूलमती पहुंच गई । किसी ने उसे सूरज के बारे में बता दिया था । उसने कहा-

" नहीं, गुरुजी मेरे घर में रहेंगे ,इन्होंने मेरी जान बचाई थी। अब मैं मां की तरह सेवा करुंगी "

विद्या कुछ कहना चाहती थी पर कह न सकी । सूरज फूलमती के घर जाने के लिए तैयार हो गए, सूरज फूलमती के घर आ गए ।

पार्वती एक दिन स्कूल पहूंचकर विद्या को बताने लगी कि अब तो मास्टर बाबू नहीं बचेंगे। ओ डायन उसे खा के रहेगी । बहुत दिनों से मास्टर बाबू दिखाई नहीं दे रहे हैं । विद्या डर गई,

वह सीधे फूलमती के घर पहूंच गई। वहां सूरज को न पाकर क्रोध मे कहने लगी-

" वही हुआ जिसका डर था , तूने सूरज को खा लिया । बता कहाँ है सूरज-- नहीं तो गांव को जमा कर लूंगी ।

फूलमती- " पता नहीं बेटी, सूरज कल से गायब है । "

इतना सुनते ही विद्या बौखला गई । उसने फूलमती को बालों से खींचते हुए बाहर निकाल लिया और लोगों को चिल्ला-चिल्ला कर बूलाने लगी । विद्या ने जमा लोगों को पूरा किस्सा बता दिया । सब लोग फूलमती को धिक्कारने लगे।

फूलमती रोने लगी । सोचने लगी- ईश्वर अब क्या होगा ? फूलमती अपना सर पकड़ कर रोने लगी। उसी समय एक बच्चे ने आवाज लगाई-

" सूरज गुरुजी आ गए-- "

सूरज समझ गया कि सब मिलकर फूलमती को परेशान कर रहे हैं । सूरज ने सबको ललकारते हुए कहा- "   खबरदार ! जो किसी ने कुछ कहा, तुम लोग जिसे डायन कहते हो वो मेरे लिए मां के समान है और इसने रात-दिन मेरी सेवा की है , विद्या तुम जैसी पढ़ी लिखी लड़की भी इन अंधविश्वासों को मानने लगी ।

विद्या- " लेकिन सूरज इन्होंने कहा कि तुम गायब हो गए हो । "

सूरज- " हां ,क्योंकि मैं इन्हें बिना बताए शहर गया था । मुझे जरूरी काम था । शायद , मैं बताता तो ये जाने नहीं देती । इन्हें कोई जादू- टोना नहीं आता । ये तो केवल ममता और प्यार का जादू- टोना करती हैं । "

सूरज की बातों से विद्या और गांववाले सहमत थे, विद्या ने फूलमती से माफी मांगी ।

9.सोने का त्याग

हरी राम
शोधार्थी, दक्षिण भाषा प्रचार सभा, मद्रास

धनतेरस का दिन था उस दिन सोना खरीदना शुभ माना जाता है इसलिए हरि अपने माता पिता के साथ बाजार में सोना खरीदने के लिए गया था खरीददारी करने के बाद वे अपने घर पहुँच गए, हरि के पिता भैंसों को चारा डालने चले गए और उसकी माता घर के कम में लग गयी कुछ देर बाद स्मरण किया कि सोना कहाँ रखा है? बहुत स्मरण के बाद भी पता नही लगा तो सभी ने मिलकर घर के हर कोनों में खोजा लेकिन सोने का कही नही पता चला , सभी हार कर किसी एक जगह पर बैठ गए । पड़ोसी ने पूछा कि क्या हुआ तो हरि के पिता ने कहा कि कल हम सोना खरीद कर लेकर आए परन्तु हरि की माँ उसे कहीं रखकर भूल गयी । पड़ोसी ने बताया कि वह लाल रंग की थैली तो नही थी क्या ? 'हाँ' में सभी ने मिलकर उत्तर दिया । पड़ोसी ने कहा कि वह तो कुछ समय पहले भैंस उसे खा रही थी । फिर सभी मिलकर उसे चारा डालते और उसका गोबर को साफ करते ताकि सोना मिल जाए, लेकिन कोशिश सभी की नाकाम होती नजर आ रही थी पड़ोसी ने कहा भैंस को मार कर उसके पेट से सोना निकाला जा सकता है । एक बार फिर सभी ने 'ना' में उत्तर दिया । ऐसा नही हो सकता कि हम किसी निर्जीव पशु को

सोने के लिए उसको मार दे । हरि के पिता ने कहा सोने से ज्यादा हमें भैंस का जीवन अधिक महत्वपूर्ण है ।

10.संवेदना

रिजवाना परवीन

घर के मुख्य द्वार से प्रवेश करने के बाद तीन बड़े कमरों को पार करती हुई जब मैं आंगन में पहुंची जहां चारों ओर फूलों के गमले सजे हुए थे, हल्की सी किसी पंछी की कलकलाहट सुनाई दी इस आवाज में उत्साह नहीं था, मैंने ध्यान लगाया और आवाज की ओर बढ़ी २-३ मिनट के बाद मुझे तुलसी के गमले के पास (जो पीछे के बगीचे से सटी हुई दीवार के पास रखा हुआ था) एक दर्द कराहती हुई नन्ही चिड़िया का बच्चा दिखा,मैंने उसे देखते ही पहचान लिया ये। वही बच्चा था जिसे संसार में प्रवेश दिलाने के लिए उसके माता-पिता लगभग एक महीने से कड़ी जद्दोजहद में लगे हुए थे। मैंने घोंसला बनाने वाले दिन से ही इस पंछी के जोड़े को ध्यान से देखा था,न जाने क्यूं जब भी सांझ के समय मैं अपने आंगन में प्रवेश करती तो मुझे अपने घर के पीछे लगे सुन्दर बगीचे में नीम के हरे भरे पेड़ पर इस पंछी का घोंसला अपनी ओर आकर्षित कर ही लेता था,कई दिनों तक एसी ही स्थिती बनी रहने के कारण मैं उन पंछियों पर विशेष ध्यान देने लगी! मैंने देखा था कि किस प्रकार से नर व मादा पंछी ने नीम के पेड़ पर घोंसला बनाने के लिए उपयुक्त स्थान ढूंढा था, फिर किस प्रकार से प्रात: काल से लेकर सांझ तक सूखी झाड़ियां तथा तिनके चुनकर लाते और अपने छोटे से घर की दीवारें खड़ी

करते,कई हफ्ते इसी प्रकार बीत जाने के पश्चात आखिर कार उस पंछी जोड़े ने अपना घर तैयार कर लिया था! मैं हर सांझ अपने प्रागंण में चाय की प्याली लिए बै कर इस मनोरम दृश्य का आनंद लिया करती थी! फिर मैंने देखा मादा पंछी अब अपने घोंसले में ही अधिक समय व्यतीत कर रही थी मैंने अंदाजा लगाया कि शायद चिड़िया के नन्हे बच्चे ने इस संसार में प्रवेश ले लिया है।नर पंछी दूर दूर तक उड़ता चोंच में दाना लाता तथा अपने बच्चे का भरण पोषण करता कई दिनों बाद मैंने देखा माता तथा पिता पंछी अब साथ में घोंसले से कुछ दूर तक की उड़ान भरते और वापस लौट आते मैं समझ चुकी थी कि नन्हे पंछी को आकाश में उड़ने के लिए माता- पिता उसे प्रेरित कर रहे थे। इसी बीच वर्षा में भीग जाने के कारण मुझे तीव्र ज्वर ने जकड़ लिया लगभग चार दिनों तक मैं कमरे से बाहर नहीं निकली। पांचवे दिन मैं आंगन में पहुंची तो मुझे बहुत कुछ बदला हुआ सा लगने लगा था पेड़ पर लगा घोंसला सूना हो चुका था और जिस नन्हे मेहमान के लिए उसके माता-पिता ने इतनी मेहनत की थी वह नन्हा पंछी मेरी हथेलियों पे अपनी आखिरी सांसें गिन रहा था। मेरे ह्रदय में आक्रोश की भावना दौड़ रही थी, मैं समझ चुकी थी कि आकाश में ऊंची उड़ान भरने। की कोशिश में ही हार जाने के कारण माता -पिता द्वारा त्यागे गए नन्हे पंछी के ये अंतिम पल है। मैंने उसके पार्थिक शरीर को उसी तुलसी के गमले में रख दिया और ये सोचते हुए अपने कमरे में लौट गई कि क्या पंछी भी कलयुग के मनुष्यों की तरह ही संवेदनहीन हो चुके हैं ?

11."दर्द और डर के संसार में सवेरा"

ममता कुमारी
स्थान- दिल्ली एन.सी.आर
जन्म स्थान- बिहार

विश्वास का दर्द,

किसी सुनसान जंगल में खोए,

एक बच्चे-सा प्रतीत होता है!

जो चीखता है,

चिल्लाता है,

बार-बार आवाज़ लगाता है,

पर उसकी आवाज़ गूँजकर;

उसी के पास वापस आ लौटती है,

फिर..

वह सहमा-सा किसी पेड़ से सटकर,

पीठ के बल सिकुड़कर बैठ जाता

और उसके बाद आती चुप्पी भरी शाम,

जो करती रात का इंतज़ार;

गहराते रात के अँधेरे में कुछ जुगनू,

उसकी उदास आँखों की रौशनी बढ़ाते,

और बताते कि-

"कैसे होता है

जंगल में भी सवेरा?"

12. रंगों को रंगों पर लगाकर घूमता हूँ मैं

चेतन बगड़िया

रंगों को रंगों पर लगाकर घूमता हूँ मैं,

बेजान दुनिया में कोई पल भर जो देख ले।

नज़रों को नज़रों से चुराकर सोचता हूँ ये,

डोर नज़रों की कोई मेरी ओर फेंक ले।

हूँ परेशान वो चलो कुछ बात और है

हँस रहा हूँ कि अब कोई ना हाल पूछ लें।

छुप गयी हर बात मेरे रंग में अब यूँ

चेहरे की सलवट की कोई ना चाल पूछ लें।

रंगों से मिलकर रोज़ अब ये सोचता हूँ मैं

हर आदमी के देख कितने रंग होते है।

एक ही रंग में सभी को रंग देता हूँ

इस कदर सब यूँ परेशान क्यों इतने तंग होते है?

पर विविध ही श्रेष्ठ ये भी बात जानकर
दुनिया की रीत में मैंने कई रंग बदले है।
तहज़ीब की दावत से अब परहेज करता हूँ
जब से सभी जो प्रिय थे वो ढंग बदले है।
कोई बेरंग हो बिलकुल और वो सारी बात बोल दे
ना सोचे पल भर भी और वो सारे राज़ खोल दे।
सहमें से हैं सभी किसी बंद कमरे में
जाम की मस्ती में अब यूँ झूमता हूँ मैं।
बेजान दुनिया में कोई पल भर जो देख ले
रंगों को रंगों पर लगाकर घूमता हूँ मैं।

13. चुनाव आ गए है

चेतन बगड़िया

दोस्तों से दुश्मनों तक प्यार बटते देखा

समोसों और ठंडी खीर का आहार बटते देखा।

मंदिरों के नाम पर चमत्कार बटते देखा

कुछ दिनों से यूँ कहे संसार बटते देखा।

लगता है चुनाव आ गए है।

आज झाड़ू भी लगी और वो कचरा उठ गया

कुछ यूँ सट्टे भी लगे बाज़ार सारा लूट गया।

यश की आँधी में बहे वो नोट सारे गिर पड़े

भीड़ में इज़्ज़त बचाने बिन बात ही कुछ भीड़ पड़े।

चुनाव कुछ नज़दीक आ गए है।

इस वोट की मुद्रा में अब सब हाथ जोड़े है खड़े

इस चुनावी द्वन्द में बिन बात फिर जनता लड़े।

मूर्खों की टोली अड़ गयी कि जीत कर ही आएँगे

सरकार से जो धन मिलेगा सब साथ मिलकर खाएँगे।

हाँ हाँ चुनाव आ गए हैं।

भारत बटा अब जात में और अपनी-पराई खाट में

ऊँच-नीच की बात में यूँ नेताजी कहे सब ठाठ में।

ये जो चेहरा आज है वो कल समझ मे आएगा

अंधा जो बाटे रेवड़ी तो घर की घर मे खायेगा।

(आन्धों बाटे रेवड़ी घर घर का न दे)

हाँ ये चुनाव कुछ दिनों में खत्म भी होंगे।

फ़िर चिलम की बात में और कई आघात में

सब मिलेंगे और उठेगा फिर धुँआ उस रात में।

सब हँसेंगे सोचकर बिन बात कैसे फस गए

और वो नेताजी कही विश्राम में है बस गए।

फिर क्या

अब वापिस अगले चुनावों का इंतज़ार होगा।

14. क्या आज मैं आजाद हूँ?

चेतन बगड़िया

पूछो इन जंजीरो से क्या आज मैं आजाद हूँ?

इन आदतों और संगतों से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?

गाँव की चौखट से पूछो और काँच के महलों से तुम

उस नौकरी से भी ज़रा अब पूछ लो अपना पता।

वो धुँआ जो अब शहर पर रात-दिन है छा रहा

माँ की ममता पूछती जो दिन तेरा कैसा रहा?

इस ज़माने को बता दो हर साल जो पूछे तुम्हें

हँसकर कहो तुम आज ये अब मैं तो बस आज़ाद हूँ।

धर्म से पूछो अगर तो सच बता देंगे सभी

क्यों झगड़ते हो ज़रा मेरी बात भी सुन लो कभी।

क़ैद है सब इस नगर में और जाम की है मस्तियाँ

मेरे शौक और मेरे मकानों ने कुचल दी बस्तियाँ।

मेरी आदतों का गुलाम बन मैंने कहा है जोर से

आज़ाद का तमगा लिए मैं भी हूँ निकला शोर से।

साफ को सुन्दर कहुँ और दूर नीचे से रहूँ
पूछता हूँ मैं सभी से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
इस सोच और इस क्रोध से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
नए सफ़र की खोज से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
इस ज़िन्दगी कि ठोकरों से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
मेरी सोच में उन नौकरों से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
प्रेमिका की उस गली से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
देवताओं की बलि से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
नेताजी की झूठे भाषणों से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
इस ज़िन्दगी के राशनों से क्या आज मैं आज़ाद हूँ?
हाँ चंद्रशेखर हूँ अगर मैं और भगत सा वीर हूँ
कृष्ण हो मेरे सखा तो अर्जुन बाण का मैं तीर हूँ।
जो कपट से हूँ रहित और जीवन आँधियों से हूँ घिरा
उस काल के संवाद में मैं हर पहर आज़ाद हूँ।

15. राजनीति

चेतन बगड़िया

मैं लोकतंत्र में हूँ स्वतंत्र हर बात वही जो शोर बने

चाहे हो विनाश मेरा प्रयास चेतक सी मेरी दौड़ बने।

आँखों में लहू अब दौड़ रहा और लो जलती है सीने में

खूंखार बहुत पर भयभीत हूँ मैं अब ख़ाक मज़ा है जीने में।

मैं विपक्ष का हूँ प्रत्यक्ष मेरी जीत है केवल लड़ने में

मैं साम्यवाद का हूँ संवाद मन लगता मेरा धरने में।

हर प्रचार और समाचार कितने नेता ही जेल गए

रात समय फिर बात उठी नेताजी खेला खेल गए।

सपनों के समंदर थे गहरे और दूर तैर कर जाना था

गरीब की रोटी फिर छोटी, थोड़ा सत्ता का हर्जाना था।

मैं राष्ट्रवाद में बस जवाब सवाल में मैं एक आरी हूँ

कोई सोच ना ले ना अब पूछे कुछ मैं ही सत्ता का अधिकारी हूँ।

दामिनी के नाम से ढका उसे और वो माँ अब तक भी रोती है

बंद करो गोरखधंधा साहेब सत्ता नींद चैन से सोती है।

समाजवाद भी कर फसाद बैठा है अपने कोने में

टूट गयी वो माला अब, समय लगा था बहुत पिरोने में।

सत्य की अर्थी अब निकले फाँसी का जैसे फंदा है

झूठ सभी अब चबा रहे लगता है रजनीगंधा है।

पूंजीवाद की चिंगारी, जनता आग लपेट में है

आँख खुली तो देखा ये की मेज के नीचे भेट में है।

एक नयी सोच और नया उदय अब आता कोई बाज नहीं

कुर्सी का खेल पुराना ये लगता है अब आगाज़ नहीं।

आवाज़ तेज कर जीते सब एक दिन जनता का भी आये

शब्दों का विराम ना हो कोई, वीर तभी वो कहलाये

वीर तभी वो कहलाये।

16. मेरी पहचान

चेतन बगड़िया

असफलता से मत आँक ऐ दोस्त मेरी पहचान को
उसूलों की मिट्टी से मैंने अपना घर बनाया है।
लोग ढूंढते रहते यहाँ कोई बात तो सुन ले
आईने देखा जो खुद को इंसान पाया है।
रौंद के मुझसे जो माफ़ी मांग ली तूने
तेरी आँख में देखा जो मैंने दर्द पाया है।
बढ़ते जो देखा इस जहाँ ने मायूस थे चेहरे
हार के देखो मैंने इस जग को हँसाया है।
सब भूख से डरते यहाँ जाने कहाँ पहुंचे
रोटी टुकड़ो में बाँट तुझको भी खिलाया है।
सब जीत कर मगरूर थे कि क्या जाने पा बैठे
मैंने हार कर देखो ये अपना घर सजाया है।

17. एक कवि की तलाश में

मृदुल सी मृणाल
सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग
एम ई एस केवीयं कालेज, वलांचेरि
मलप्पुरम जिला, केरल
mridul4rocksteim@gmail.com
Contact: 9567010640

निकला मैंने, कवि की तलाश में,

अंजान गलियों से,

बिना किसी भावनाएँ

भटकता आत्मा हूं मैं

चला हूं जो रास्ते जहां

उसका पांव मुद्रण हुए

लेलिया वो सांस

जिसमें थी घृण

घृणा है जीवन से

भावनाओं से, विचारों से

निकला मैंने, कवि की तलाश में

संवेदना

मेदिनीपुर के धरती से

जहां बारी थी हवा

उसका उदासी मुस्कुरा से

चला हूं धूप में

जहां विकृत था उनका साया

दिया अलविदा हमेशा-हमेशा

मनोहरा देवी की साया

निकला मैंने, कवि की तलाश में

गढ़ाकोला की रस्तों में

जहां उसने इंतज़ार की

उस काले सूरज को

सपनों को तोट कर

शब्दों के हत्या किया

और दफन किया उन्नाव के मिट्टी में

निकला मैंने, कवि के तलाश में

रांची की सड़कों से

जहां सुना दिया विलाप

बदला दुनिया चार दीवारें

ना था मन कठोर

लेकिन हुए नहीं नरम

निकला मैंने, कवि की तलाश में

इलाहाबाद के पथ पर

जहां मिली वो अस्पष्ट रूप

वो एक तोटती पथ्थर

उसकी हथौड़े में जंग लग गया था

चला हूं मैं दारागंज के तरफ

जहां मुकम्मल हुआ वो अध्याय

मिला उसको जमुना की रेती पर

निकला नहीं शब्दों मूंह से

मौन है विद्वान की भूषण

18.कैंसर ट्रेन

मृदुल सी मृणाल
सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग
एम ई एस केवीयं कालेज, वलांचेरि
मलप्पुरम जिला, केरल
mridul4rocksteim@gmail.com
Contact: 9567010640

हर दिन एक ट्रेन निकलता है!

बठिंडा सो गया होगा,

रात की परदे गुप्त है!

नौ घंटे के एक घोषण हुआ !!

यात्री उदासीन से सुना दिया,

भीड़ नहीं लेकिन खामोश.

दर्द या नींद? उनके चेहरे विरक्त थे!!

आया गया है गाड़ी

डिब्बें एकदम भरा था!

गार्ड ने निशाना दिया.

लाल बदला हरा हुआ,

इजाज़त है नई उम्मीदों का!

गुज़रा मालवा के हरियाली से,

बिकानेर के रेगिस्तान की तरफ.

नई मरीजों थे,

जिन्होंने नहीं थे मेहमान नवाजी.

अप्रत्याशित मेहमान ने,

लूट किया सपनों.

दूर से सुना गुरबाणी.

किसने आंखों कि आंसू पोंछे,

दर्द या भक्ति? उनके चेहरे विरक्त थे!

बच्चों थे जिन्हें नहीं जा सकते स्कूल कल,

बूढ़ों थे जिन्हें खाली किया आपने आशाएं,

युवक थे जो खुद में हूं!

बिना शब्द बोलने पड़ा है इस यात्रा!!

मक्सद खो दिया है.

राजस्थान के शुष्क भूमि पर,

मिलेगा वो राहत?

आज भी चलता है ये गाड़ी!

और लेके चलते हैं मेरा अज्ञात नियत

19. जय घोष करो

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

जय घोष करो , जय घोष करो ,
एक स्वर में जय घोष करो ।
कश्मीर से केरल तक जयघोष करो ,
पूरब से पश्चिम तक जयघोष करो ।।
स्वर समता के गाने के लिए ,
प्रगति पथ बनाने के लिए
पददलित विस्मृत बंधुओं का क्लेश हरो ।
जय घोष करो , जय घोष करो ।।

शून्य से चंद्र-मंगल पाने के लिए ,
विज्ञान को हर जन का व्यवहार बनाने के लिए ,
नवकर्म का , नवधर्म का विचार भरो ।
जय घोष करो , जय घोष करो ।।

भूलकर भेद का विष , अमृत का संचार करो ,

निज स्वार्थों के दर्शन छोड़ो ,जनमन भ्रमित न करो,

निकल पड़ी गंगा प्रगति की , न लो लांछन अगति की,

किसी बाला पे, किसी हाला पे व्यसन का हाथ न धरो,

जय घोष करो   ,जय घोष करो ।।

कश्मीर से केरल तक जय घोष करो ,

जापान से अमेरिका तक जय घोष करो ,

तुम्हें विश्वजन देख रहा ।

तुम्हारी संस्कृति को तरस रहा ।

क्षणिक क्षणभंगुर सुखों की दीप्ति का नाश करो ।

जय घोष करो , जय घोष करो ।।

स्वकर्मफल आशीष पर संतोष करो ,

जय घोष करो   ,जय घोष करो ।।

20. गावों की सड़कें

डॉ. दिनेश श्रीवास
शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

गांवों को जोड़ती ,गांवों से निकलती ,

गांवो को ढूंढती , गांवों की सड़कें ।

चमकीले सांप की तरह,

हरे भरे खेतों के बीच से,

बड़े पेड़ों के बीच से ,चली जा रही हैं

जैसे कोई कमनीय किशोरी ।।

झोपड़ी से, घरों से, खलिहानों से ताकते लोग,

सड़कों पर मदमस्त चलते लोग,

घर के बाहर सड़कों पर दिनचर्या बिताते लोग ,

सड़कों पर गउयें , बकरियां ,मजमा लगाये लोग,

बीच सड़क पर मस्त बैलगाड़ी सवार ।

सड़कों पर भैसों को हाक कर भागते लोग ।।

मस्ती में मोटर और साइकिल चलाते अल्हड़ किशोर
नियमविहीन तीव्रगति से मोटर चलाते घनघोर ।

गुजरती किसी किशोरी को आकृष्ट करने ,

फर्राटे भरते हैं ,उससे नयन मिलन को मरते हैं ,

कभी सचमुच बेकाबू होकर गिर पड़ते हैं ।।

कहीं जीवन का साजो-सामान गाड़ी पर लाद व्यापारी,

धीरे-धीरे गाड़ी चलाता ,ज्यों जीवन की गति ,

कोई परिवार के एकाधिक लोगों को ढोता ,

अपने जीवन से लड़ता , जीवन जी रहा है ।।

सड़कों के दोनों और फैला गांवों का संसार ,

खेत-खलिहान ,बाग-बगीचे और बाजार ,

बाजारों में बनती लाल-लाल जलेबियां ,

सड़कों से गुजरते लोगों के मुंह में पानी लाती हैं,

दंतविहीन बूढ़ों को पास बुलाती हैं ।

रसीले आम बूढ़ों के मन को गुदगुदाती हैं ।।

खेल तमाशों की धमक , औषधियों की महक ,

बड़े पर्वतों के उस पार औषधियों का अंबार ,

जहां सड़कें जाने से हैं लाचार ।

छोटे पर्वतों को पाटकर बनाती अपना आधार ।।

गांवों को जोड़ती , गांवों से निकलती ,

गांवों को ढूंढती ,गांवों की सड़कें ,

चमकीले सांप की तरह ,

चली जा रही हैं शहरों की ओर ,

गांवों से लेकर शहरों की ओर ,

श्यामू को पढ़ाने शहरों की ओर ,

रामू की मां का इलाज कराने शहरों की ओर ,

शहरों से गांवों में खुशियां लाने शहरों की ओर,

ताकि शहर और गांव दोनों खुशहाल हो ,

सबमें जीवन का सम विकास हो .

इसके लिए चड़के बनती रहें ,बनती रहें ,

सबको जोड़ती रहें
सदा पलती रहें ।
हरे-भरे खेतों की तरह ।।
कितने अरमान बह गए उस नदी में ,
कितने डूब गए उस नदी में,
कई जल समाधि बने उस नदी में,
भीकू की बहन स्कूल जाने बहाती आंसू
भीकू पढ़ -लिख कर बन गया धासू
इंजीनियर बन सड़क- पुल गढ़ता है ।
उसकी सोच से गांव बढ़ता है ।।
गांवों को जोड़ती है ,गांवों से निकलती ,
गांवों को ढूंढती ,गांवों की सड़कें ,
गांवों की सरल संस्कृति शहरों को परोसती सड़कें ,
पलती रहें हरे भरे खेतों की तरह ,
सड़को को बढ़ने दो ,
भारत को नव विकास गढ़ने दो ।
बापू के ग्रामराज का सूरज चढ़ने दो।।

21. अखण्ड भारत

वकील कुमार यादव

ये भारत सदा अखण्ड रहे।

पुष्पित इसका भूखण्ड रहे।

भारत का गौरव अटल रहे।

चमकीले इसके पटल रहे।

अब सदा परस्पर प्रीत रहे।

हर सरगम में संगीत रहे।

सम्प्रभुता इसकी बनी रहे।

हर क्षेत्र में सदा धनी रहे।

संकट कोई भी छू न पाएं।

दुर्दिन के घन कभी न छाएं।

हम हैं न रहे पर देश रहे।

गौरवशाली परिवेश रहे।

दिल में ये आठों याम रहे।

भारत का ऊँचा नाम रहे।

इस आँगन में मधुमास रहे।

सब खुशियाँ इसके पास रहे।

अब सिर्फ एक अभिलाषा हैं।

सब जन जन की ये भाषा हैं।

ये भारत अटल अखण्ड रहे।

पुष्पित इसका भूखण्ड रहे।

जब तक दुनिया में सूरज हैं,

जिंदा सदा स्वाभिमान रहे।

गंगा में धार बहे जब तक,

तब तक ये हिंदुस्तान रहे।

22. माँ : पूर्ण के लिए अपूर्ण रचना

अजय कुमार
विद्यार्थी
(द्वितीय वर्ष, एम.ए. हिंदी साहित्य ;
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

बिन कहे मेरे दिल का हाल जान लेती है

माँ मेरे हर लफ़्ज़ की सच पहचान लेती है

जब भी झूठ बोलता हूँ वो जान जाती है

जानते हुए भी झूठ को सच मान जाती है

कभी डाँटती चिल्लाती समझाती मुझको

कभी पापा का डर देकर धमकाती मुझको

कभी कभी मेरेलिए पापा को धमका देती है

कभी भाई-बहन को खरी-कोटि सुना देती है

कभी कभी अपने काममें मैं उसे भूल जाता हूँ
पर मेरे जरूरत के हर काम उसे याद रहते हैं

मैं खुदा ढूंढने मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे जाता हूँ
अपने दिल की व्यथा पत्थरों को सुनाता हूँ

पर सच तो यही है सुनती समझती मेरी वही है
बिन कहे समझ लेती,मेरे दर्दको जानती वही है

मेरी खुशी के लिए हजारों दुख चुपचाप सहे हैं
राधेय अजेय हो खुदा से हरबार बार-बार कहे हैं

जाने किस मिट्टी से खुदा ने माँ को बनाया है
या खुदा माँ के रूप में खुद उतर आया है

23. हदें : सीमा से परे

अजय कुमार
विद्यार्थी
(द्वितीय वर्ष, एम.ए. हिंदी साहित्य ;
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

चल साथ हदें पार करते हैं

सीमाएं तेरी भी हैं बंदिशें मेरी भी हैं

सपने तेरे भी हैं ख्वाहिशें मेरी भी हैं

मलाल उसका क्या करना गुजर गया है जो

आने वाले पर अख्तियार करते हैं

चल साथ हदें पार करते हैं!

हद हो जवानी का या जमाने का सितम हो

मुश्किलें हों परीक्षा की या किताबों की कसम हो

छूट गए जो मौके छोड़ वर्तमान पर वार करते हैं

चल साथ हदें पार करते हैं!

जिंदगी क्या उसकी जो बीती गंवाने में

वो उम्र भी क्या जो निकली रोटी कमाने में

पेट की चिंता छोड़ झोली ज्ञान से भरते हैं

चल साथ हदें पार करते हैं!

मन की इच्छाएँ हों या सांसों का मिलन हो

उम्र के तकाजे पर संकीर्णताओं का हनन हो

मात्र एक जीवन के हजारों काम करते हैं

चल साथ हदें पार करते हैं!

24. जो मैं हूं

जुली झा

Hindi Teacher (Laxmi Public Senior Secondary school)

M.A. in Hindi.

जो मैं हूं...

ना उसकी खोज है,

ना ही पहचान।

जो मैं हूं...

ना उसकी चाहत है,

ना ही जरूरत।

जो मैं हूं...

ना उसका वक्त है,

ना ही दौर।

जो मैं हूं...

ना उसकी कमी है,

ना ही अधूरापन।

जो मैं हूं...

ना उसकी आदत है,

ना ही दस्तूर।

जो मैं हूं...

ना उस का चलन है,

ना ही आचरण।

आज के इस दौर में,

सहजता की, ना कदर है ना ही समझ।

जो सहज है, ना वो काबिल है ना ही आधुनिक।

25. उफ़

जुली झा
Hindi Teacher (Laxmi Public Senior Secondary school)

M.A. in Hindi.

उफ़! ये हवा और तेरा साथ में आ जाना।

उफ़! ये अदा और तुझसे मोहब्बत हो जाना।

तुझे आते हुए, मेरा देखते रह जाना।

उफ़! तेरी मोहब्बत का, मेरी इबादत हो जाना।

उफ़! मेरे इज़हार पर, तेरा कुछ ना कह पाना।

मेरी इबादत का, तेरा ना समझ पाना।

उफ़! ये नादानियां और मेरा हंस के चले जाना।

उफ़! तेरी मासूमियत का, मेरी आदत हो जाना।

मुझे हंसते हुए, तेरा देखते रह जाना।

उफ़! ये वक्त और तेरा यूं चले जाना।

उफ़! मेरी समझ का, तेरी ना समझी हो जाना

तुझे जाते हुए, मेरा देखते रह जाना।

उफ़! तेरी रोमानी और मेरी नजरों का झुक जाना।

उफ़! ये बातों-बातों में तेरा इज़हारे इश्क कर जाना।

मेरी झुकती हुई नजरों से, तेरा ओझल हो जाना।

उफ़! तेरी मोहब्बत में, मेरा ना संभल पाना।

उफ़! मेरी इबादत में, तेरा शामिल हो जाना।

मेरा ना संभलते हुए भी संभल जाना।

उफ़! तेरे इश्क का, मेरी चाहत हो जाना।

तेरे इश्क का, मेरी चाहत हो जाना।।

26. नहीं रहना मुझे उस समाज में

ममता
MA in Urban Studies
From Ambedkar University
Address- RZA - 219 Nihal Vihar Nangloi, New Delhi - 110041
Email id - mamtaoutlook@gmail.com

नहीं रहना मुझे उस समाज में, जहां मेरे पैदा होते ही परिवार का हिस्सा समझने की बजाए, बोझ समझा जाए।

नहीं रहना मुझे उस समाज में, जहां मेरे लिंग के कारण मुझे दूध की जगह, रोटी दाल दी जाए।

नहीं रहना मुझे उस समाज में, जहां मेरी कौशल विकास को रोककर, हाथों में कॉपी पेन, खिलौने की बजाय झाड़ू थमाई जाए।

नहीं रहना मुझे उस समाज में, जहां मेरी शिक्षा का अधिकार छीनकर, संस्कारों के नाम पर घर पर रखा जाए।

संवेदना

नहीं रहना मुझे वह समाज में, जहां मेरी किशोरावस्था को देख, घर की इज्जत के नाम पर, मुझे समझने की बजाय, दुपट्टा रखने को कहा जाए।

नहीं रहना मुझे इस समाज में, जहां पूर्ण रूप से परिपक्व होने से पहले ही, शादी के नाम पर बेटी को नौकरानी बनाकर पराए घर भेज दिया जाए।

नहीं रहना मुझे उस समाज में, जहां एक बहू, को श्रृंगार और शोभा के नाम पर बेड़ियों में जकड़ दिया जाए।

नहीं रहना मुझे उस समाज में, जहां स्त्री को सुशील और सहनशीलता की देवी कहकर, स्त्री को सभी इच्छाओं, भावनाओं, सपनों को सहनशीलता की आग में जला दिया जाता है।

नहीं रहना मुझे उस समाज में जहां, “मां बच्चे की जां” के नाम पर बच्चों के पालन पोषण की सभी जिम्मेदारियां मां (औरत) को सौंपी जाती है।

नहीं रहना मुझे उस समाज में, जहां स्वर्ग पाने की इच्छा में, माता पिता की चिता को आग, सिर्फ एक बेटा ही देता हो।

नहीं रहना मुझे उस समाज में, जहां स्त्रियां स्वयं पुरुषों को भगवान और अपने से ज्यादा बलवान समझती हों।

नहीं रहना मुझे उस समाज में जहां महिलाओं को परंपराओं के नाम पर हर एक पल घुटन के साथ और मर - मर के जीना सिखाया।

27. भारी-भारी माहवारी

कुमारी आरती
MDes Sociol Design
(School of Design)
Ambedkar University, Delhi
फोन नं: 8448456517
ई-मेल आईडी: aartitoday@gmail.com
पता: नांगलोई, नई दिल्ली

गुड्डू कुछ गंदा-गंदा कहता है, मुझे छेड़कर जाता है।

जाने क्यों समझता नहीं, हम सब इसका हिस्सा हैं।

पेट दर्द होता है।

सब भारी-भारी लगता है।

नीचे लाल-लाल, गीला-गीला है।

क्या कहीं मुझको चोट लगी है।

मैं गुड्डू के संग खेली थी, क्या इसमें कोई लगती है?

क्या है कुछ समझ नहीं आता

वकील कुमार यादव

कहाँ जाऊँ, किससे पूछूं?

बीमार-बीमार सी फिरती हूँ।

क्या है ये?

कब तक होगा?

पैड क्या होता है, कहाँ से मिलता है?

पैड कैसे लगाऊँ?

पैंटी में या बॉडी में?

दीदी, मेरे दोस्त भी नहीं जानते।

सुनो गुड़िया बात पते की

पैड मिलेगा केमिस्ट से- 2

बैंड-बैंड तुम भूल जाओ।

जो मिले, सो ले आओ

पैड-टेप का कवर हटाओ

पैंटी में तुम इसे चिपकाना

जैसे चाहो, वैसे पहनो

खाओ, खेलों-खुदो शोर मचाओ

संवेदना

अच्छा पैसे नहीं है, अब सुनो जुगाड़ कहानी

घर में ढूंडो कोई सूती साफ कपड़ा

हो नया या पुराना

गद्दी इसकी बनाकर तुम

पैंटी में तुम ऐसे ही रखना

इसे कहते हैं माहवारी

दिन हैं इसके छह से सात

हर महीने होगी मुलाक़ात

यह जीवन का हिस्सा है।

इससे रचती दुनिया है

दीदी!

गुड्डू से मुझे, शर्म है आती

वो कुछ गंदा-गंदा कहता है

उसको अभी समझ नहीं आता-2

तुम सीखों उसको बताना

जब वो सुनेगा नॉलेज वाली बातें

वकील कुमार यादव

तब अच्छा-अच्छा बोलेगा

पेट दर्द होता है।

सब भारी-भारी लगता है।

भारी-भारी माहवारी

28. नसीहत

कुमारी आरती
MDes Sociol Design
(School of Design)
Ambedkar University, Delhi
फोन नं: 8448456517
ई-मेल आईडी: aartitoday@gmail.com
पता: नांगलोई, नई दिल्ली

उस दिन मुझे अपने सारे कपड़े उतरने पड़े

मेरा बदन आधे से ज्यादा खुल हुआ था।

अरे नहीं ऐसा कुछ नही है, सब ठीक था।

तुम्हारे आने की तैयारी में उतरे थे।

मेरी माँ कहती रही बहुत शर्मिली है मेरी बेटी।

उन सबने एक न सुनी, पता था ये तो करना ही है नॉर्मल

बात है।

सामने डॉक्टर था, उसने अपना काम तेजी से शुरू कर

दिया।

यदि तरीका है तुम्हारे, मेरे और उसके आने का

फिर न जाने क्यों? तुम इतना मचल जाते हो।

सुरक्षा के नाम पर हर समय शरीर ढँक नसीहत देते हो।

29. लव और कुश

कुमारी आरती
MDes Sociol Design
(School of Design)
Ambedkar University, Delhi
फोन नं: 8448456517
ई-मेल आईडी: aartitoday@gmail.com
पता: नांगलोई, नई दिल्ली

कुश एक जवान लड़का है और लव एक विवाहित वयस्क है।

लव- तू गाना बाजा रहा है यहाँ मेरा बैंड बाजा हुआ।

कुश- अरे मेरा 21 मई का हिंदुस्तान नहीं मिल रहा है।

लव- खबरदार जो 21 मई का नाम दोबारा लिया तो।

कुश- मुझे याद नहीं था की यह आपकी शादी की डेट है। IAS की तेयारी कर यहा हूँ अखबार नहीं मिला तो ऑनलाइन लेक्चर सुन रहा हूँ।

लव- इंडियन अडमिनिस्ट्रेशन सर्विस में जाना है तो दा हिन्दू पढ़।

कुश- हिंदुस्तान हो या दा हिन्दू क्या फर्क पढ़ता है।

लव- इन छोटी-छोटी चीजों पर काम करने से बड़ा एक्जाम निकलता है।

कुश- अच्छा ऐसा क्या! तो भाई ये बताओ की शादी क्यों होती है।

लव- इसमें पुछने जैसा क्या है। लड़की आएगी घर सभालेगी, कपड़े धोएगी, झाड़ू-पोछा करेगी, खाना बनाएगी, पैर दवाएगी,

कुश- माफ़ कीजिये भाई ये तो मेरे नौकर की कहानी है।

लव- ओह अच्छा! तो....हम्म दो-चार अंडे देगी।

कुश- क्या भाई ये तो मेरी मुर्गी की कहानी है। लगता है आपने शराब पी रखी है मैंने पूछा की शादी क्यों होती है।

लव- यार मुझे नहीं पता, शादी क्यों होती है, शादी क्यों होती है। शराब पी रखी है। तुझे पता है तो तू ही बता दे।

कुश- मुझे तो आपने से पता चल गया। आपका नशा उतरेगा तो, हम सुबह बात करेंगे।

लव का नशा उतरता है और फिर...

संपादक परिचय

वकील कुमार यादव

वकील कुमार यादव एक सहायक प्रोफ़ेसर, भारतीय उपन्यासकार एवं युवा लेखक हैं। अभी तक इन्होंने कुल 8 पुस्तकें लिखी हैं। इनकी एक हिंदी कहानी संग्रह की पुस्तक टॉप बेस्ट शेलिंग में 13वे पोजीशन पर रही है। इन्होंने अंग्रेजी साहित्य मे स्नातक एवं स्नातकोत्तर की पढ़ाई अनुग्रह नारायण महाविद्यालय पटना से की है। तत्काल अभी वे अंग्रेजी साहित्य में पीएचडी कर रहे हैं। हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं पर इनकी खास पकड़ है। अतः दोनों ही भाषाओं में किताबें लिखते हैं। इनकी लेखनी आज हजारों पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। उनके पास 25 प्रकाशन हैं जिनमें किताबें, यूजीसी केयर लिस्ट जर्नल और आईएसबीएन किताबों के अध्याय शामिल हैं। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के 160 सम्मेलनों में भाग लिया है। उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में 14 पत्र भी प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने भारत के विभिन्न केंद्रीय विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित 8 संकाय विकास कार्यक्रमों (Faculty Developement

Programmes) को पूरा किया है। उन्हें बिहार के विभिन्न कॉलेजों द्वारा मुख्य वक्ता के रूप में भी आमंत्रित किया जाता है। विभिन्न राज्य विश्वविद्यालयों में शोध विद्यार्थी (Research Scholars) उनके उपन्यासों पर शोध कर रहे हैं।

Bibliography

- Waiting for Smile(English Novella,2019)
- A collection of Short Stories,कहानी-संग्रह (Hindi Edition,2019)
- Diamond General Studies,डायमंड सामान्य अध्ययन(Hindi,2019)
- Diamond English Grammar(English,2018)
- Two Souls of the City (English Novella 2019)

Edited Books

- The Flying Poetics (Anthology of English Poems, Edition 2021)
- Contemporary National Issues and Their Remedies (English, Edition 2021)
- The Blossom: Motivational short stories (English, Edition 2021)
- Contemporary Multi-Disciplinary Rsearch Dimension (English, Edition 2021)

राहुल मिश्रा

राहुल मिश्रा एक लेखक, संपादक, पीएचडी अंग्रेजी, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार हैं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर किया है। उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों में पुस्तक अध्याय के रूप में कई लेख लिखे हैं। उन्होंने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्रिकाओं में कई शोध लेखों में भी योगदान दिया है।

डॉक्टर दिनेश श्रीवास

जन्म - बिलासपुर,छत्तीसगढ़ ,दिसंबर1977 एक सामान्य परिवार में माता श्रीमती आशा देवी , पिता गणेश श्रीवास के परिवार में

शिक्षा- बीएससी (गणित),एम. ए. , एम फिल हिंदी में , सभी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर से

शोध - मोहन राकेश के नाटक और व्यक्ति स्वातंत्र्य: एक विश्लेषण (पी.एच.-डी.)

गतिविधियां -- 1. पावर ग्रिड कारपोरेशन कोरबा में अनेक बार "राष्ट्रभाषा हिंदी के महत्व " विषय पर रिसोर्स पर्सन एवं मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित

2. हिंदी शोध विषय पर रिसोर्स पर्सन के रूप में कई महाविद्यालयों में आमंत्रित

3. संयोजक के रूप में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

4.जनगणना एवं निर्वाचन प्रक्रिया में राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में कार्य

5.अंतरराष्ट्रीय-राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों मे10 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुति एवं 50 से अधिक बार प्रतिभागिता

6.महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर नाट्यनिर्माण और निर्देशन - " चुनाव का खेल जारी है " नामक नाटक पर जिला स्वीप पुरस्कार

7. नेहरु युवा केन्द्र के युवा सांसद चयन प्रतियोगिता में निर्णायक का कार्य

8.अंतरराष्ट्रीय-राष्ट्रीय शोध जर्नल में 10 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित

कृतियां -

आलोचना/पाठ्यपुस्तक

1. एम. ए. हिन्दी की पाठ्यपुस्तक " भाषा विज्ञान " में अध्याय लेखन

2. एम.ए.हिन्दी की पाठ्यपुस्तक " भारतीय साहित्य " में अध्याय लेखन

3.एम.ए. हिन्दी की पाठ्यपुस्तक "भारतीय साहित्य " का संपादन

<u>काव्य-कथा संग्रह</u>

1. अनुभूति - कहानी संग्रह प्रकाशनाधीन

2. स्पर्श - काव्य संग्रह प्रकाशनाधीन

सम्प्रति- सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),शा. इं.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा छत्तीसगढ़

सम्पर्क- ए 71 रामाग्रीन सिटी खमतराई रोड, बिलासपुर छत्तीसगढ़ 495006, मो.न.-7770899636 , ईमेल - dineshsriwash77@gmail.com